लेक्चर लुधियाना

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक : लेक्चर लुधियाना
Name of book : Lecture Ludhiana
लेखक : हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम
Writer : Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani
Masih Mau'ud Alaihissalam
अनुवादक : डा अन्सार अहमद पी.एच.डी आनर्स इन अरबिक
Translator : Dr Ansar Ahmad, Ph.D, Hons in Arabic
टाईपिंग, सैटिंग : नादिया परवेज़ा अज़हर
Typing Setting : Nadiya Perveza Azher
संस्करण तथा वर्ष : प्रथम संस्करण (हिन्दी) सितम्बर 2018 ई०
Edition. Year : 1st Edition (Hindi) September 2018
संख्या, Quantity : 1000
प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher : Nazarat Nashr-wa-Isha'at,
Qadian, 143516
Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस,
क़ादियान, 143516
ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at : Fazl-e-Umar Printing Press,
Qadian, 143516
Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक का यह हिन्दी अनुवाद श्री डॉ० अन्सार अहमद ने किया है और तत्पश्चात मुकर्रम शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), मुकर्रम फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), मुकर्रम अली हसन एम. ए. और मुकर्रम नसीरुल हक़ आचार्य, मुकर्रम अब्नुल मेहदी एम् ए और मुकर्रम सय्यद मोहियुद्दीन एम् ए ने इसकी प्रूफ़ रीडिंग और रीवियु आदि किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत
हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़
नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

पुस्तक परिचय

लेक्चर लुधियाना

यह लेक्चर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 4 नवम्बर 1905 ई० को लुधियाना में दिया। यह लुधियाना वही शहर है जहां सर्वप्रथम हुज़ूर अलैहिस्सलाम के विरुद्ध कुफ़्र का फ़त्वा जारी किया गया था। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने इस बात को अपनी सच्चाई का निशान ठहराया है कि उलेमा ने मिल कर इस सिलसिले को मिटाने के प्रयास किए। परन्तु उनके प्रयासों का परिणाम उल्टा निकला और अल्लाह तआला के इल्हामों के अनुसार अल्लाह तआला का समर्थन एवं सहायता सिलसिले के साथ ही रही। हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं -

> "मैं इस शहर में चौदह वर्ष के बाद आया हूं और मैं ऐसे समय इस शहर से गया था जबकि मेरे साथ कुछ आदमी थे और काफ़िर कहने, झुठलाने और दज्जाल कहने का बाज़ार गर्म था।"

इन लोगों के विचार में था कि थोड़े ही दिनों में यह जमाअत धिक्कृत होकर बिखर जाएगी और इस सिलसिले का नामोनिशान मिट जाएगा। अत: इस उद्देश्य के लिए बड़ी-बड़ी कोशिशें और योजनाएं की गई और एक बड़ा भारी षड्यंत्र मेरे विरुद्ध यह किया गया कि मुझ पर और मेरी जमाअत पर कुफ़्र का फ़त्वा लिखा गया और सम्पूर्ण हिन्दुस्तान में उस फ़त्वे को घुमाया गया।

> "परन्तु मैं देखता हूं और आप देखते हैं कि वे काफ़िर कहने वाले मौजूद नहीं। और ख़ुदा तआला ने मुझे

अब तक जीवित रखा और मेरी जमाअत को बढ़ाया।''

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 20 पृष्ठ-249)

इसके बाद हुज़ूर बल देकर कहते हैं -

''मैं दावे से कहता हूं कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से लेकर इस समय तक किसी झूठे का उदाहरण दो जिसने 25 वर्ष पूर्व अपनी गुमनामी की अवस्था में ऐसी भविष्यवाणियां की हों। यदि कोई व्यक्ति ऐसा उदाहरण प्रस्तुत कर दे तो निस्सन्देह स्मरण रखो कि यह सम्पूर्ण सिलसिला और कारोबार झूठा हो जाएगा।''

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 20 पृष्ठ-275)

इस लेक्चर में सम्बोधित अधिकतर मुसलमान थे। इसलिए हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अपना और अपनी जमाअत का इस्लाम की बुनियादी अस्थाओं पर ईमान लाने का इक़रार किया है और विस्तारपूर्वक हज़रत मसीह नासिरी अलैहिस्सलाम की मृत्यु को किताब, सुन्नत, इज्मा और अनुमान से प्रमाणित किया है।

अन्त में हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने मुसलमानों को इस्लाम के प्रकाशमान भविष्य की ख़ुशखबरी देते हुए फ़रमाया है -

''अब समय आ गया है कि इस्लाम की पुनः प्रतिष्ठा प्रकट हो और इसी उद्देश्य को लेकर मैं आया हूं ...... मैं बड़े ज़ोर और पूर्व विश्वास तथा विवेक से कहता हूं कि अल्लाह तआला ने इरादा फ़रमाया है कि दूसरे धर्मों को मिटा दे और इस्लाम को विजय और शक्ति दे।''

(रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 20 पृष्ठ- 290)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

लेक्चर लुधियाना

जो हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने 4 नवम्बर 1905 ई. को हज़ारों लोगों की उपस्थिति में दिया

सर्वप्रथम मैं अल्लाह तआला का आभार व्यक्त करता हूं जिसने मुझे यह अवसर दिया कि मैं फिर इस शहर में प्रचार करने के लिए आऊं। मैं इस शहर में चौदह वर्ष के बाद आया हूं और मैं ऐसे समय इस शहर से गया था जबकि मेरे साथ कुछ लोग थे। और काफ़िर कहने, झुठलाने और दज्जाल कहने का बाज़ार गर्म था। और मैं लोगों की नज़र में उस मनुष्य के समान था जो धिक्कृत और तिरस्कृत होता है। और उन लोगों का विचार था कि यह जमाअत थोड़े ही दिनों में बहिष्कृत होकर बिखर जाएगी तथा इस सिलसिले का नामो निशान मिट जाएगा। अत: इस उद्‌देश्य से बड़े-बड़े प्रयास और षड्यंत्र किए गए और एक बड़ा भारी षड्यंत्र मेरे विरुद्ध यह किया गया कि मुझ पर और मेरी जमाअत पर कुफ्र का फ़त्वा लिखा गया और सारे भारत में इस फ़त्वे को फिराया गया। मैं अफ़सोस के साथ वर्णन करता हूं कि मुझ पर सर्वप्रथम कुफ्र का फ़त्वा इसी शहर के कुछ मौलवियों ने दिया। परन्तु मैं देखता हूं और आप देखते हैं कि वे काफ़िर कहने वाले मौजूद नहीं और ख़ुदा तआला ने मुझे अब तक जीवित रखा और मेरी जमाअत को बढ़ाया। मेरा विचार है कि वह कुफ्र का फ़त्वा

जो दोबारा मेरे विरुद्ध प्रस्तावित हुआ उसे हिन्दुस्तान के समस्त बड़े शहरों में फिराया गया और उस पर लगभग दो सौ मौलवियों और शेखों की गवाहियां तथा मुहरें लगवाई गईं। उसमें प्रकट किया गया कि यह व्यक्ति बेईमान है, काफ़िर है, दज्जाल है, मुफ़्तरी है अपितु बहुत बड़ा काफ़िर है। अत: जो-जो किसी से हो सका मेरे बारे में उसने कहा और उन लोगों ने अपने विचार से समझ लिया कि बस यह हथियार अब सिलसिले को समाप्त कर देगा। और वास्तव में यदि यह सिलसिला मानवीय योजना और इफ़्तिरा होता तो उसे तबाह करने के लिए यह फ़त्वे का हथियार बहुत ही शक्तिशाली था। परन्तु उस को ख़ुदा तआला ने स्थापित किया था फिर वह विरोधियों के विरोध और शत्रुता से कैसे मर सकता था। विरोध में जितनी तीव्रता आती गई उतनी इस सिलसिले की प्रतिष्ठा और सम्मान हृदयों में जड़ पकड़ता गया। और आज मैं ख़ुदा तआला का आभार व्यक्त करता हूं कि या तो वह समय था कि जब मैं इस शहर में आया और यहां से गया तो केवल कुछ लोग मेरे साथ थे और मेरी जमाअत की संख्या बहुत ही कम थी और या अब वह समय है कि तुम देखते हो कि एक बड़ी संख्या में जमाअत मेरे साथ है और जमाअत की संख्या तीन लाख तक पहुंच चुकी है और प्रतिदिन तरक़्क़ी हो रही है और निस्सन्देह करोड़ों तक पहुंचेगी।

तो इस महान इन्क़िलाब को देखो कि क्या मानवीय हाथ का कार्य हो सकता है? दुनिया के लोगों ने तो चाहा कि इस सिलसिले का नामोनिशान मिटा दें और यदि उन के अधिकार में होता तो वे इसे कभी का मिटा चुके होते। परन्तु यह अल्लाह तआला का काम

है। वह जिन बातों का इरादा करता है दुनिया उनको रोक नहीं सकती और जिन बातों का दुनिया इरादा करे परन्तु ख़ुदा तआला उन का इरादा न करे वे कभी हो नहीं सकती हैं। विचार करो। मेरे मामले में समस्त उलेमा, पीरज़ादे और गद्दी नशीन विरोधी हो गए और दूसरे धर्म के लोगों को भी मेरे विरोध के लिए अपने साथ मिलाया, फिर मेरे बारे में हर प्रकार की कोशिश की। मुसलमानों को बदगुमान करने के लिए मुझ पर कुफ्र का फ़त्वा दिया और फिर जब इस प्रस्ताव में भी सफल न हुए तो फिर मुक़द्दमें आरंभ किए। मुझे ख़ून के मुक़द्दमे में फंसाया और हर प्रकार की कोशिशें कीं कि मैं दण्ड पा जाऊं। एक पादरी के क़त्ल का आरोप मुझ पर लगाया गया। उस मुक़द्दमें में मौलवी मुहम्मद हुसैन ने भी मेरे विरुद्ध बहुत कोशिश की और स्वयं गवाही देने के लिए गया। वह चाहता था कि मैं फंस जाऊं और मुझे दण्ड मिले। मौलवी मुहम्मद हुसैन की यह कोशिश प्रकट करती थी कि वह तर्कों और प्रमाणों से असमर्थ है। इसलिए यह नियम की बात है कि जब शत्रु तर्कों से असमर्थ हो जाता है और प्रमाणों से दोषी नहीं कर सकता तो कष्ट देने और क़त्ल का प्रस्ताव रखता है और देश से निष्कासित करने का इरादा करता है और उसके विरुद्ध भिन्न-भिन्न प्रकार की योजनाएं तथा षड्यंत्र करता है। जैसा कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुकाबले में जब काफ़िर असमर्थ हो गए और हर प्रकार से निश्चल हो गए तो अन्त में उन्होंने भी इस प्रकार के बहाने सोचे कि आप को क़त्ल कर दें या क़ैद कर दें या आप को देश से निकाल दिया जाए। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबा को कष्ट दिए, परन्तु अन्ततः

वे सभी अपने इरादों और योजनाओं में असफल रहे। अब वही सुन्नत और ढंग मेरे साथ हो रहा है, परन्तु यह दुनिया समस्त लोकों के प्रतिपालक के बिना कोई अस्तित्व नहीं रखती। वही है जो झूठे और सच्चे में अन्तर करता है और अन्ततः सच्चे की सहायता करता है और उसे विजयी करके दिखा देता है। अब इस युग में जब ख़ुदा तआला ने फिर अपनी क़ुदरत का नमूना दिखलाया है। मैं उसके समर्थनों का एक जीवित निशान हूं और इस समय तुम सभी देखते हो कि मैं वही हूं जिसे क़ौम ने अस्वीकार किया और मैं (ख़ुदा के) मान्य लोगों के समान खड़ा हूं। तुम अनुमान करो कि इस समय आज से चौदह वर्ष पूर्व जब मैं यहां आया था तो कौन चाहता था कि एक आदमी भी मेरे साथ हो। उलेमा, फ़ुक़रा और हर प्रकार के प्रतिष्ठित आदरणीय लोग यह चाहते थे कि मैं मर जाऊं और इस सिलसिले का नामोनिशान मिट जाए। वे कभी पसन्द नहीं करते थे कि उन्नतियां प्राप्त हों। परन्तु वह ख़ुदा जो हमेशा अपने बन्दों की सहायता करता है और जिसने सत्यनिष्ठों को विजयी करके दिखाया है उसने मेरी सहायता की और उसने मेरे विरोधियों के विरुद्ध उनकी आशाओं तथा योजनाओं के सर्वथा विपरीत मुझे वह मान्यता प्रदान की कि एक दुनिया को मेरी ओर ध्यान दिलाया जो इन विरोधों और अवरोधों को चीरती हुई मेरी ओर आई और आ रही है। अब विचार करने का स्थान है कि क्या मानवीय प्रस्तावों और जोजनाओं से यह सफ़लता हो सकती है कि दुनिया के पैठ रखने वाले लोग एक व्यक्ति के मारने की चिन्ता में हों और उसके विरुद्ध हर प्रकार की योजनाएं बनाई जाएं, उसके लिए ख़तरनाक आग जलाई जाए परन्तु वह इन समस्त आपदाओं से साफ

निकल जाए। कदापि नहीं। ये ख़ुदा तआला के काम हैं जो हमेशा उसने दिखाए हैं।

फिर इसी बात पर ज़बरदस्त तर्क यह हैं कि आज से पच्चीस वर्ष पूर्व जबकि कोई भी मेरे नाम से परिचित न था और न कोई व्यक्ति क़ादियान में मेरे पास आता था या पत्राचार रखता था। इस गुमनामी की हालत में उन बेबसी के दिनों में अल्लाह तआला ने मुझे सम्बोधित करके फ़रमाया –

يأتون من كلّ فجٍ عميق يأتيك من كلّ فَجٍّ عميق
لا تصعّر لخلق اللّٰهِ ولا تسئم من النّاس ربّ لا تذرنى فردًا
وانت خير الوارثين

यह वह ज़बरदस्त भविष्यवाणी है जो उन दिनों में की गई और छप कर प्रसारित हो गई और उसे हर धर्म और मिल्लत के लोगों ने पढ़ा। ऐसी हालत और ऐसे समय में कि मैं अख्याति के कोने में पड़ा हुआ था और कोई व्यक्ति मुझे न जानता था। ख़ुदा तआला ने फ़रमाया कि तेरे पास सुदूर देशों से लोग आएंगे और बड़ी प्रचुरता से आएंगे और उनके लिए अतिथि सत्कार के हर प्रकार के सामान और आवश्यक वस्तुएं भी आएंगी। चूंकि एक व्यक्ति हज़ारों-लाखों लोगों की आवभगत के समस्त सामान उपलब्ध नहीं कर सकता और न इतने ख़र्चों को सहन कर सकता है। इसलिए स्वयं ही फ़रमाया – ياتيك من كلّ فجٍّ عميق उनके सामान भी साथ ही आएंगे। और फिर मनुष्य लोगों की प्रचुरता से घबरा जाता है और उनसे अशिष्टता कर बैठता है। इसलिए इस से मना किया कि उन से अशिष्टता न करना। और फिर यह भी फ़रमाया कि लोगों की

अधिकता को देखकर थक न जाना।

अब आप विचार करें कि क्या यह बात मानवीय शक्ति के अन्दर है कि पच्चीस-तीस वर्ष पूर्व एक घटना की सूचना दे? और वह भी उसी के बारे में, और फिर उसी प्रकार घटित भी हो जाए? इन्सानी अस्तित्व और जीवन का तो एक मिनट का भी भरोसा नहीं और नहीं कह सकते कि दूसरा सांस आएगा या नहीं। फिर ऐसी ख़बर देना यह उसकी शक्ति और अनुमान में क्योंकर आ सकता है। मैं सच कहता हूं कि यह वह समय था जबकि मैं बिल्कुल अकेला था तथा लोगों से मिलने से भी मुझे नफ़रत थी। और चूंकि एक समय आने वाला था कि लाखों लोग मेरी ओर रुजू करें। इसलिए इस नसीहत की आवश्यकता पड़ी-

لا تصعّر لخلق اللّٰہ و لا تسئم من النّاس۔

फिर उन्हीं दिनों में यह भी फ़रमाया-

انت منّی بمنزلۃ توحیدی۔ فحان ان تعان و تعرف بین الناس۔

अर्थात् वह समय आता है कि तेरी सहायता की जाएगी और तू लोगों के मध्य पहचाना जाएगा। इसी प्रकार से फ़ारसी, अरबी और अंग्रेज़ी में प्रचुरता से ऐसे इल्हाम हुए हैं जो इस निबंध को प्रकट करते हैं।

अब सोचने का स्थान है उन लोगों के लिए जो ख़ुदा तआला का भय रखते हैं कि इतने लम्बे समय पहले एक भविष्यवाणी की गई और वह पुस्तक में छप कर प्रसारित हुई। बराहीन अहमदिया ऐसी पुस्तक है जिसे दोस्त-दुश्मन सब ने पढ़ा। सरकार को भी उसकी कापी भेजी गई। ईसाइयों, हिन्दुओं ने उसे पढ़ा। इस शहर में भी बहुत से

लोगों के पास यह पुस्तक होगी वे देखें इसमें दर्ज है या नहीं? फिर वे मौलवी (जो केवल शत्रुता के कारण मुझे दज्जाल और कज़्ज़ाब कहते हैं और यह वर्णन करते हैं कि कोई भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई) शर्म करें और बताएं कि यदि यह भविष्यवाणी नहीं तो फिर और भविष्यवाणी किसको कहते हैं, वह पुस्तक है जिसका रीव्यू मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन बटालवी ने किया है। चूंकि वह मेरे सहपाठी थे इसलिए प्रायः क़ादियान आया करते थे, वह ख़ूब जानते थे। और ऐसा ही क़ादियान, बटाला, अमृतसर तथा आस-पास के लोगों को ख़ूब मालूम है कि उस समय मैं बिल्कुल अकेला था और मुझे कोई जानता न था और उस समय की हालत से बुद्धि के नज़दीक अनुमान से दूर मालूम होता था कि मुझ जैसे अख्यात मनुष्य पर ऐसा समय आएगा कि लाखों लोग उसके साथ हो जाएंगे। मैं सच कहता हूं कि मैं उस समय कुछ भी न था, अकेला और बेकस था। अल्लाह तआला स्वयं उस समय मुझे यह दुआ सिखाता है -

ربّ لا تذرنی فردًا وانت خیر الوارثین۔

यह दुआ इसलिए सिखाई कि प्यार रखता था उन लोगों से जो दुआ करते हैं। क्योंकि दुआ इबादत है। और उसने फ़रमाया है-

اُدْعُوْنِیْٓ اَسْتَجِبْ لَکُمْ (अलमोमिन-61)

दुआ करो मैं स्वीकार करूंगा और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इबादत का मग़्ज़ (सार) और तत्व दुआ ही है और इसमें दूसरा संकेत यह है अल्लाह तआला दुआ के रंग में सिखाना चाहता है कि तू अकेला है और एक समय आएगा कि तू अकेला न रहेगा और मैं पुकार कर कहता हूं कि जैसा यह दिन

प्रकाशमान है इसी प्रकार यह भविष्यवाणी प्रकाशमान है और यह बात निश्चित है कि मैं उस समय अकेला था **कौन खड़ा होकर कह सकता है कि तेरे साथ जमाअत थी।** परन्तु अब देखो कि अल्लाह तआला के इन वादों के अनुसार और इस भविष्यवाणी के अनुसार जो उसने एक समय पूर्व ख़बर दी थी कि एक बड़ी जमाअत मेरे साथ कर दी, ऐसी अवस्था और स्थिति में इस महान भविष्यवाणी को कौन झुठला सकता है? फिर जबकि इसी पुस्तक में यह भविष्यवाणी भी मौजूद है कि लोग ख़तरनाक़ तौर पर विरोध करेंगे और इस जमाअत को रोकने के लिए हर प्रकार के प्रयास करेंगे परन्तु मैं उन सब को असफल करूंगा।

फिर बराहीन अहमदिया में यह भी भविष्यवाणी की गई थी कि जब तक पवित्र-अपवित्र में अन्तर न कर लूंगा नहीं छोड़ूंगा। मैं इन घटनाओं को प्रस्तुत करके उन लोगों को सम्बोधित नहीं करता जिन के दिलों में ख़ुदा तआला का भय नहीं और जो मानो यह समझते हैं कि हमने मरना ही नहीं, वे ख़ुदा तआला के कलाम में अक्षरान्तरण करते हैं। बल्कि मैं लोगों को सम्बोधित करता हूं जो अल्लाह तआला से डरते हैं और विश्वास रखते हैं कि मरना है और मौत के दरवाज़े करीब हो रहे हैं। इसलिए कि ख़ुदा तआला से डरने वाला ऐसा धृष्ट नहीं हो सकता। वे विचार करें कि क्या पच्चीस वर्ष पूर्व ऐसी भविष्यवाणी करना मानवीय शक्ति और अनुमान का परिणाम हो सकता है? फिर ऐसी हालत में कि कोई उसे जानता भी न हों और साथ ही यह भविष्यवाणी भी हो कि लोग विरोध करेंगे परन्तु वे असफल रहेंगे। विरोधियों के असफल रहने और अपने सफल होने की भविष्यवाणी

करना एक विलक्षण बात है। यदि इसके मानने में कोई सन्देह है तो फिर उदाहरण प्रस्तुत करो।

मैं दावे से कहता हूं कि हज़रत आदम से लेकर इस समय तक के किसी झूठे का उदाहरण दो जिसने पच्चीस वर्ष पूर्व अपनी गुमनामी की अवस्था में ऐसी भविष्यवाणियां की हों और वे यों चमकते हुए दिन की भांति पूरी हो गईं हों यदि कोई व्यक्ति ऐसा उदाहरण प्रस्तुत कर दे तो निस्सन्देह स्मरण रखो कि यह सम्पूर्ण सिलसिला और कारोबार झूठा हो जाएगा, परन्तु अल्लाह तआला के कारोबार को कौन झूठा कर सकता है। यों झुठलाना तथा उचित कारण के बिना इन्कार और उपहास करना अकुलीन का काम है कोई कुलीन व्यक्ति ऐसा साहस नहीं कर सकता। मैं अपनी सच्चाई को इसी पर निर्भर कर सकता हूं यदि तुम में कोई स्वस्थ हृदय रखता हो। खूब याद रखो कि यह भविष्यवाणी कभी रद्द नहीं हो सकती जब तक उसका उदाहरण प्रस्तुत न किया जाए। मैं फिर कहता हूं कि यह भविष्यवाणी बराहीन अहमदिया में मौजूद है जिसका रीव्यू मौलवी अबू सईद (मुहम्मद हुसैन बटालवी) ने लिखा है। इसी शहर में मौलवी मुहम्मद हसन और मुंशी मुहम्मद उमर इत्यादि के पास होगी। उसकी प्रति मक्का, मदीना, बुख़ारा तक पहुंची। सरकार के पास उसकी कापी भेजी गई। हिन्दुओं, मुसलमानों, ईसाइयों, ब्राह्मणों ने उसे पढ़ा और वह कोई अज्ञात पुस्तक नहीं अपितु वह ख्याति प्राप्त पुस्तक है। कोई पढ़ा-लिखा आदमी जो धार्मिक रुचि रखता हो उस से अपरिचित नहीं है। फिर इस पुस्तक में यह भविष्यवाणी लिखित मौजूद है कि दुनिया तेरे साथ हो जाएगी, दुनिया में तुझे प्रसिद्धि दूंगा, तेरे विरोधियों को

असफल रखूंगा। अब बताओ क्या यह काम किसी झूठे का हो सकता है। यदि तुम यही फैसला देते हो कि हां मुफ़्तरी का काम हो सकता है तो फिर इसके लिए उदाहरण प्रस्तुत करो। यदि उदाहरण दिखा दो तो मैं स्वीकार कर लूंगा कि मैं झूठा हूं। परन्तु कोई नहीं जो इसका उदाहरण दिखा सके और यदि तुम उसका उदाहरण प्रस्तुत न कर सको और निस्सन्देह नहीं कर सकोगे तो फिर मैं तुम्हें यही कहता हूं कि ख़ुदा तआला से डरो और झुठलाने से रुक जाओ।

स्मरण रखो ख़ुदा तआला के निशानों को बिना किसी प्रमाण के रद्द करना बुद्धिमत्ता नहीं और न इसका अंजाम बरकत वाला हुआ है। मैं तो किसी के झुठलाने या काफ़िर ठहराने की परवाह नहीं करता और न उन आक्रमणों से डरता हूं जो मुझ पर किए जाते हैं। इसलिए कि ख़ुदा तआला ने स्वयं ही मुझे समय से पूर्व बता दिया था झुठलाया और काफ़िर ठहराया जाएगा और ये लोग भयंकर विरोध करेंगे परन्तु कुछ बिगाड़ न सकेंगे। क्या मुझ से पहले सच्चों और ख़ुदा तआला के मामूरों को अस्वीकार नहीं किया गया? हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर फिरऔन और फिरऔन के साथियों ने, हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम पर फ़क़ीहियों ने, आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर मक्का के मुश्रिकों ने क्या-क्या हमले नहीं किए परंतु उन हमलों का क्या परिणाम हुआ? इन विरोधियों ने उन निशानों के मुक़ाबले में कभी कोई उदाहरण प्रस्तुत किया? कभी नहीं। उदाहरण प्रस्तुत करने से तो हमेशा असमर्थ रहे। हां जीभें चलती थीं, इसलिए वे झूठा कहते रहे। इसी प्रकार से यहां भी जब असमर्थ हो गए तो और तो कुछ बस न चला **दज्जाल, कज़्ज़ाब** कह दिया। परन्तु अपने मुंह की फूंकों से

क्या ये ख़ुदा तआला के प्रकाश को बुझा देंगे? कभी नहीं बुझा सकते।

(अस्सफ़-9) وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْكَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ

दूसरे विलक्षण चमत्कार और निशानों को वे लोग जो कुधारणा का तत्त्व अपने अन्दर रखते हैं कह देते हैं कि शायद चालाकी हो परन्तु भविष्यवाणी में उन्हें कोई बहाना शेष नहीं रहता। इसलिए नुबुव्वत के निशानों में महान निशान और चमत्कार भविष्यवाणियों को ठहराया गया है। यह बात तौरात से भी सिद्ध है और पवित्र क़ुर्आन से भी। भविष्यवाणियों के बराबर कोई चमत्कार नहीं। इसलिए ख़ुदा तआला के मामूरों को उनकी भविष्यवाणियों से पहचाना जाना चाहिए। क्योंकि अल्लाह तआला ने यह निशान निर्धारित कर दिया है -

(अलजिन्न-27,28) لَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖ اَحَدًا اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَسُوْلٍ

अर्थात् अल्लाह तआला के ग़ैब का किसी पर प्रकटन नहीं होता परन्तु अल्लाह तआला के चुने हुए रसूलों पर होता है।

फिर यह भी स्मरण रहे कि कुछ भविष्यवाणियां अपने अन्दर बारीक रहस्य रखती हैं और बारीक बातों के कारण उन लोगों की समझ में नहीं आती हैं जो दूरदर्शी आंखें नहीं रखते तथा केवल मोटी-मोटी बातों को समझ सकते हैं। ऐसी ही भविष्यवाणियों पर सामान्यतया झुठलाया जाता है और जल्दबाज़ लोग कह उठते हैं कि वे पूरी नहीं हुईं। इसी के संबंध में अल्लाह तआला फ़रमाता है -

(यूसुफ़-111) وَظَنُّوْا اَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا

इन भविष्यवाणियों में लोग सन्देह पैदा करते हैं परन्तु वास्तव में वे भविष्यवाणियां ख़ुदा तआला की सुन्नतों के अधीन पूरी हो जाती हैं। तथापि यदि वे समझ में न भी आएं तो मोमिन और ख़ुदा से डरने वाले

मनुष्य का काम यह होना चाहिए कि वह उन भविष्यवाणियों पर नज़र डाले जिन में बारीकियां नहीं अर्थात् जो मोटी-मोटी भविष्यवाणियां हैं। फिर देखे कि वे कितनी संख्या में पूरी हो चुकी हैं। यों ही मुंह से इन्कार कर देना संयम के विरुद्ध है। ईमानदारी और ख़ुदा के भय से उन भविष्यवाणियों को देखना चाहिए जो पूरी हो चुकी हैं परन्तु जल्दबाज़ों का मुंह कौन बन्द करे।

इस प्रकार के मामले मेरे सामने ही नहीं आए हज़रत मूसा, हज़रत ईसा, और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भी सामना करना पड़ा। फिर यदि यह मामला मेरे सामने भी आए तो आश्चर्य नहीं। अपितु अवश्य था कि ऐसा होता क्योंकि ख़ुदा की सुन्नत यही थी। मैं कहता हूं कि मोमिन के लिए तो एक साक्ष्य भी पर्याप्त है उसी से उसका दिल कांप जाता है। परन्तु यहां तो एक नहीं सैकड़ों निशान मौजूद हैं। अपितु मैं दावे से कहता हूं कि इतने हैं कि मैं उन्हें गिन नहीं सकता। यह साक्ष्य कम नहीं कि दिल पर विजय पालेगा झूठा कहने वालों को अनुकूल बना लेगा यदि कोई ख़ुदा तआला का भय करे और दिल में ईमानदारी और दूरदर्शिता से सोचे तो उसे सहसा मानना पड़ेगा कि ये ख़ुदा की ओर से हैं।

फिर यह भी स्पष्ट बात है कि विरोधी जब तक रद्द न करे और उसका उदाहरण प्रस्तुत न करे ख़ुदा तआला का प्रमाण विजयी है।

अब सारांश यह है कि मैं उसी ख़ुदा का आभार व्यक्त करता हूं **जिसने मुझे भेजा है** और इस तूफान के बावजूद जो मेरे विरुद्ध उठा और जिसकी जड़ और प्रारंभ इसी शहर से हुआ और फिर दिल्ली तक पहुंचा, परन्तु उसने समस्त तूफ़ानों और विपत्तियों में मुझे सही

सलामत और सफल निकाला। और मुझे ऐसी हालत में इस शहर में लाया कि तीन लाख से अधिक पुरुष-स्त्री मेरे बैअत करने वालों में सम्मिलित हैं। और कोई महीना नहीं गुज़रता जिसमें दो हज़ार, चार हज़ार और कभी पांच-पाँच हज़ार लोग इस सिलसिले में दाख़िल न होते हों।

फिर उस ख़ुदा ने ऐसे समय में मेरी सहायता की कि जब क़ौम ही शत्रु हो गई। जब किसी व्यक्ति की क़ौम ही उसकी शत्रु हो जाए तो वह बड़ा अकेला और बड़ा असहाय होता है क्योंकि क़ौम ही तो हाथ-पैर और अवयव होती है, वही उसकी सहायता करती है दूसरे लोग तो शत्रु होते ही हैं कि हमारे धर्म पर आक्रमण करता है, परन्तु जब अपनी क़ौम भी शत्रु हो तो फिर बच जाना और सफल हो जाना मामूली बात नहीं है अपितु यह एक शक्तिशाली निशान है।

मैं अत्यन्त अफसोस और हार्दिक दर्द से यह बात कहता हूं कि क़ौम ने मेरे विरोध में न केवल जल्दी की अपितु बहुत निर्दयता भी की। एक मसीह की मृत्यु की समस्या का मतभेद था जिसको मैं पवित्र क़ुर्आन, आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत सहाबा के इज्माअ (सर्व सम्मति), बौद्धिक तर्कों और पहली किताबों से सिद्ध करता था और करता हूं और हनफ़ी मत के अनुसार स्पष्ट आदेश, हदीस, अनुमान, शरीअत के तर्क मेरे साथ थे। परन्तु इन लोगों ने इस से पहले कि वे पूर्णरूप से मुझ से पूछ लेते और मेरे तर्कों को सुन लेते इस मामले के विरोध में यहां तक अतिशयता की कि मुझे काफ़िर ठहराया गया और इसके साथ और भी जो चाहा कहा और मेरे ज़िम्मे लगाया। ईमानदारी, नेकी और संयम की मांग यह थी कि

पहले मुझ से पूछ लेते। यदि मैं ख़ुदा और रसूल के कथनों से बाहर जाता तो निस्सन्देह इन्हें अधिकार था कि मुझे जो चाहते कहते दज्जाल, कज़्ज़ाब इत्यादि। परन्तु जबकि मैं प्रारंभ से वर्णन करता चला आया हूं कि मैं पवित्र क़ुर्आन और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुकरण से थोड़ा इधर-उधर होना बेईमानी समझता हूं। मेरी आस्था यही है कि जो इसको तनिक भी छोड़ेगा वह नारकीय है। फिर इस आस्था को न केवल भाषणों में अपितु साठ के लगभग अपनी पुस्तकों में बड़ी स्पष्टतापूर्वक वर्णन किया है और मुझे दिन-रात यही चिन्ता और ध्यान रहता है। फिर यदि ये विरोधी ख़ुदा तआला से डरते तो क्या इन का कर्त्तव्य न था कि मुझसे पूछते कि अमुक बात इस्लाम से बाहर है, इसका क्या कारण है या इसका तुम क्या उत्तर देते हो परन्तु नहीं। इसकी तनिक भी परवाह नहीं की। सुना और काफ़िर कह दिया। मैं बड़े आश्चर्य से इनकी इस हरकत को देखता हूं। क्योंकि प्रथम तो मसीह के जीवन-मृत्यु का मामला कोई ऐसा मामला नहीं कि जो इस्लाम में दाख़िल होने के लिए शर्त हो। यहां भी हिन्दू या ईसाई मुसलमान होते हैं। परन्तु बताओ कि क्या उस से यह इक़रार भी लेते हो? सिवाए इसके कि

اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَ كُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْقَدْرِ
خَيْرِهٖ وَ شَرِّهٖ مِنَ اللّٰهِ تَعَالٰى وَالْبَعْثِ بَعْدَ الْمَوْتِ۔

जबकि यह मामला इस्लाम का भाग नहीं तो फिर भी मुझ पर मसीह की मृत्यु की घोषणा से इतना अत्याचार क्यों किया गया कि यह काफ़िर है, दज्जाल है, इन को मुसलमान के क़ब्रिस्तान में दफ़्न न किया जाए, इन के माल लूट लेने वैध हैं और इन की स्त्रियों को

बिना निकाह घर में रख लेना सही है, इनको क़त्ल कर देना पुण्य का कार्य है इत्यादि इत्यादि। एक तो वह युग था कि यही मौलवी शोर मचाते थे कि यदि निन्नयानवे कारण कुफ्र के हों और एक कारण इस्लाम का हो तब भी कुफ्र का फ़त्वा नहीं देना चाहिए, उसे मुसलमान ही कहो। परन्तु अब क्या हो गया। क्या मैं उन से भी गया गुज़रा हो गया? क्या मैं और मेरी जमाअत

اشہد ان لا الہ الّا اللہ و اشہد انّ محمدًا عبدہ و رسولہ

नहीं पढ़ते? क्या मैं नमाज़ें नहीं पढ़ता? या मेरे मुरीद नहीं पढ़ते? और क्या हम रमज़ान के रोज़े नहीं रखते? और क्या हम उन समस्त आस्थाओं के पाबन्द नहीं जो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस्लाम के रूप में सदुपदेश दिए हैं?

मैं सच कहता हूं और ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहता हूं कि मैं और मेरी जमाअत मुसलमान है। और वह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और पवित्र क़ुर्आन पर उसी प्रकार ईमान लाती है जिस प्रकार से एक सच्चे मुसलमान को लाना चाहिए। मैं एक कण भर भी इस्लाम से बाहर क़दम रखना मौत का कारण विश्वास करता हूं और मेरा यही मत है कि कोई व्यक्ति जितने लाभ और बरकतें प्राप्त कर सकता है और जितना ख़ुदा का सानिध्य पा सकता है वह केवल और केवल आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे आज्ञापालन तथा पूर्ण प्रेम से पा सकता है अन्यथा नहीं। आपके अतिरिक्त अब नेकी का कोई मार्ग नहीं। हां यह भी सच है कि मैं कदापि विश्वास नहीं करता कि मसीह अलैहिस्सलाम इसी शरीर के साथ जीवित आकाश पर गए हों और अब तक जीवित क़ायम हों

इसलिए कि इस मामले को मान कर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बड़ा अपमान और निन्दा होती है। मैं एक पल के लिए इस निन्दा को सहन नहीं कर सकता। सब को मालूम है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने 63 वर्ष की आयु में मृत्यु पाई और पवित्र मदीना में आप का रौज़: (मज़ार) मौजूद है। हर वर्ष वहां हज़ारों-लाखों हाजी भी जाते हैं। अब यदि मसीह अलैहिस्सलाम के बारे में मृत्यु का विश्वास करना या मृत्यु को उनकी ओर सम्बद्ध करना अनादर है तो फिर मैं कहता हूं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में यह धृष्टता और अनादर क्यों विश्वास कर लिया जाता है? परन्तु तुम बड़ी ख़ुशी से कह देते हो कि आप ने मृत्यु पाई। मौलूद पढ़ने वाले बड़े सुन्दर स्वर में मृत्यु की घटनाओं का वर्णन करते हैं और काफ़िरों के मुक़ाबले में भी तुम बड़ी प्रफुल्लता से स्वीकार कर लेते हो कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मृत्यु पाई। फिर मैं नहीं समझता कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु पर क्या पत्थर पड़ता है कि नीली-पीली आंखें कर लेते हो। हमें भी अफसोस न होता यदि तुम आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए भी मृत्यु का शब्द सुनकर ऐसे आंसू बहाते। परन्तु अफ़सोस तो यह है कि ख़ातमुन्नबिय्यीन और सर्वर-ए-आलम के बारे में तो तुम बड़ी प्रसन्नता से मृत्यु स्वीकार कर लो और उस व्यक्ति के बारे में जो अपने आप को आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जूती का तस्मा खोलने के भी योग्य नहीं बताता जीवित विश्वास करते हो और उसके लिए मृत्यु का शब्द मुंह से निकाला और तुम्हें क्रोध आ जाता है। यदि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अब तक जीवित

रहते तो हानि न थी, इसलिए कि आप वह महान हिदायत लेकर आए थे जिसका उदाहरण दुनिया में नहीं पाया जाता और आपने वे क्रियात्मक हालतें दिखाईं कि आदम से लेकर इस समय तक कोई उनका नमूना और उदाहरण प्रस्तुत नहीं कर सकता। मैं तुम को सच-सच कहता हूं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अस्तित्त्व की आवश्यकता दुनिया तथा मुसलमानों को थी इतनी आवश्यकता मसीह के अस्तित्त्व की नहीं थी फिर आपका पवित्र अस्तित्त्व वह मुबारक अस्तित्त्व है कि जब आपने मृत्यु पाई तो सहाबा की यह हातल थी कि वे दीवाने हो गए, यहां तक कि हज़रत उमर[रज़ि.] ने म्यान से तलवार निकाल ली और कहा कि यदि कोई आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मुर्दा कहेगा तो मैं उस का सर अलग कर दूंगा। इस जोश की हालत में अल्लाह तआला ने हज़रत अबू बक्र[रज़ि.] को एक विशेष प्रकाश और प्रतिभा प्रदान की। उन्होंने सब को एकत्र किया और ख़ुत्बा पढ़ा -

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ (आले इमरान-145)

अर्थात् आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक रसूल हैं और आप से पहले जितने रसूल आए वे सब मृत्यु पा चुके। अब आप विचार करें और सोच कर बताएं कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़[रज़ि.] ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु पर यह आयत क्यों पढ़ी थी और इस से आप का क्या उद्देश्य और आशय था? और फिर ऐसी हालत में कि सब सहाबा मौजूद थे। मैं निस्सन्देह कहता हूं और आप इन्कार नहीं कर सकते कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु के कारण सहाबा[रज़ि.] के दिलों पर बड़ा आघात था

और उसको असमय और समय से पूर्व समझते थे। वे पसन्द नहीं कर सके कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु की ख़बर सुनें। ऐसी हालत में कि हज़रत उमर रज़ि. जैसा महान सहाबी इस जोश की हालत में हो उन का क्रोध कम नहीं हो सकता सिवाए इसके कि यह आयत उनकी सांत्वना का कारण होती। यदि उन्हें यह मालूम होता या यह विश्वास होता कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जीवित हैं तो वे तो जीवित ही मर जाते। वे तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बड़े प्रेमी थे तथा आप के जीवित रहने के अतिरिक्त किसी अन्य के जीवित रहने को सहन ही न कर सकते थे। फिर क्योंकर अपनी आंखों के सामने आपको मृत्यु प्राप्त देखते और मसीह को जीवित विश्वास करते। अर्थात् जब हज़रत अबू बक्र रज़ि. ने ख़ुत्बा पढ़ा तो उन का जोश कम हो गया। उस समय सहाबा रज़ि. मदीने की गलियों में यह आयत पढ़ते फिरते थे और वे समझते थे कि जैसे यह आयत आज ही उतरी है। उस समय हस्सान बिन साबित रज़ि. ने एक शोक गीत लिखा जिस में उन्होंने कहा -

كُنْتَ السَّوَادَ لِنَاظِرِیْ فَعَمِیَ عَلَیْكَ النَّاظِرُ
مَنْ شَآءَ بَعْدَكَ فَلْیَمُتْ فَعَلَیْكَ كُنْتُ اُحَاذِرُ

(हे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! तू मेरी आँख की पुतली था तेरे जाने से मेरी आँख मानो अंधी हो गई, अब तेरे बाद जो चाहे मरे, मुझे तो तेरी ही मौत का डर था- अनुवादक)

चूंकि उपरोक्त आयत ने बता दिया था कि सब मर गए इसलिए हस्सान रज़ि. ने भी कह दिया कि अब किसी की मृत्यु की परवाह नहीं। निस्सन्देह समझो कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

की तुलना में किसी का जीवन सहाबा रज़ि. पर बहुत भारी था और व उसे सहन नहीं कर सकते थे। इस प्रकार से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु पर यह पहला इज्माअ था जो दुनिया में हुआ और इस में हज़रत मसीह की मृत्यु का भी पूर्ण रूप से फ़ैसला हो चुका था।

मैं इस बात के लिए बार-बार ज़ोर देता हूं कि यह तर्क बड़ा ही शक्तिशाली तर्क है जिस से मसीह की मृत्यु सिद्ध होती है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु कोई मामूली और छोटा मामला न था जिसका आघात सहाबा रज़ि. को न हुआ हो। एक गांव का नम्बरदार या मुहल्लेदार या घर का कोई अच्छा आदमी मर जाए तो घर वालों या मुहल्ले वालों या देहात वालों को सद्मा होता है। फिर वह नबी जो सम्पूर्ण संसार के लिए रहमतुल-लिल-आलमीन हो कर आया था जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाया है -

وَمَآ اَرۡسَلۡنٰکَ اِلَّا رَحۡمَۃً لِّلۡعٰلَمِیۡنَ (अलअंबिया-108)

और फ़िर दूसरे स्थान पर फ़रमाया

یٰۤاَیُّہَا النَّاسُ اِنِّیۡ رَسُوۡلُ اللّٰہِ اِلَیۡکُمۡ جَمِیۡعًا (अलआराफ़-159)

फिर वह नबी जिस ने सच्चाई और वफ़ादारी का नमूना दिखाया और वे ख़ूबियां दिखाईं जिनका उदाहरण दिखाई नहीं देता वह मृत्यु पा जाए और उसके उन जान क़ुर्बान करने वाले अनुयायियों पर प्रभाव न पड़े जिन्होंने उसके लिए प्राणों को देने से भी संकोच न किया, जिन्होंने देश छोड़ा, स्वजन और परिजन छोड़े और उसके लिए हर प्रकार के कष्टों और दुखों को अपने लिए प्राणों का आराम समझा। एक थोड़े से विचार और ध्यान देने से यह बात समझ में आ जाती

है कि जितनी दुख और कष्ट उन्हें इस विचार की कल्पना से हो सकता है उसका अनुमान एवं कल्पना हम नहीं कर सकते। उनकी सान्त्वना और सन्तुष्टि का कारण यही आयत थी जो हज़रत अबू बक्र[रज़ि.] ने पढ़ी। अल्लाह तआला उन्हें उत्तम प्रतिफल प्रदान करे कि उन्होंने ऐसे नाज़ुक समय में सहाबियों को संभाला, मुझे अफसोस से कहना पड़ता है कि कुछ मूर्ख अपनी जल्दबाज़ी के कारण यह कह देते हैं कि यह आयात तो बेशक अबू बक्र[रज़ि.] ने पढ़ी परन्तु हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम इस से बाहर रह जाते हैं। मैं नहीं जानता कि ऐसे मूर्खों को मैं क्या कहूं। वे मौलवी कहलाने के बावजूद ऐसी व्यर्थ बातें प्रस्तुत कर देते हैं। वे नहीं बताते कि इस आयत में वह कौन सा शब्द है जो हज़रत ईसा को अलग करता है। फिर अल्लाह तआला ने तो इस में कोई बहस योग्य बात छोड़ी ही नहीं قَدْ خَلَتْ के अर्थ स्वयं ही कर दिए

اَفَاِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ (आलेइमरान-145)

यदि कोई तीसरी बात भी इसके अतिरिक्त होती तो क्यों न कह देता اَوْ رَفَعَ بِجَسَدِهِ الْعَنْصَرِيِّ اِلَى السَّمَآءِ क्या ख़ुदा तआला इसको भूल गया था जो ये स्मरण कराते हैं? نعوذ باللہ من ذلک

यदि केवल यही आयत होती तब भी पर्याप्त थी परन्तु मैं कहता हूं कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जीवन तो उन्हें ऐसा प्रिय और प्यारा था कि अब तक आप की मृत्यु की चर्चा करके ये लोग भी रोते हैं। फिर सहाबा [रज़ि.] के लिए तो और भी दर्द और आर्द्रता पैदा हो गई थी। मेरे नज़दीक मोमिन वही होता है जो आप का अनुकरण करता है और वही किसी मुक़ाम पर पहुंचता है जैसा

कि स्वयं अल्लाह तआला ने फ़रमाया है -

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِیْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ (आले इमरान-32)

अर्थात् कह दो कि यदि तुम अल्लाह तआला से प्रेम करते हो तो मेरा अनुकरण करो ताकि अल्लाह तआला तुम्हें अपना प्यारा बना ले। अब प्रेम की मांग तो यह है कि प्रियतम के कार्य के साथ विशेष प्रेम हो और मरना आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत है। आप ने मर कर दिखा दिया। फिर कौन है जो जीवित रहे या जीवित रहने की अभिलाषा करे या किसी और के लिए प्रस्तावित करे कि वह जीवित रहे? प्रेम की मांग तो यही है कि आप के अनुकरण में ऐसा गुम हो कि अपने नफ़्स की भावनाओं को थाम ले और यह सोच ले कि मैं किसी की उम्मत हूं। ऐसी स्थिति में जो व्यक्ति हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में यह आस्था रखता है कि वह अब तक जीवित हैं वह आप के प्रेम और अनुकरण का कैसे दावा कर सकता है? इसलिए कि आप के बारे में वह सहन करता है कि मसीह को सर्वश्रेष्ठ ठहरा दिया जाए और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मुर्दा कहा जाए। परन्तु उसके लिए वह पसन्द करता है कि जीवित विश्वास किया जाए।

मैं सच-सच कहता हूं कि यदि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जीवित रहते तो एक व्यक्ति भी काफ़िर न रहता। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के जीवन ने क्या परिणाम दिखाया? सिवाए इसके कि चालीस करोड़ ईसाई हैं। विचार करके देखो कि क्या तुम ने इस जीवित रहने की आस्था को परख नहीं लिया? और परिणाम भयानक नहीं हुआ? मुसलमानों में से किसी एक क़ौम का नाम लो जिसमें से

कोई ईसाई न हुआ हो परन्तु मैं निश्चित तौर पर कह सकता हूं और यह बिल्कुल सही बात है कि हर वर्ग के मुसलमान ईसाई हो चुके हैं और उनकी संख्या एक लाख से भी अधिक होगी। ईसाइयों के हाथ में मुसलमानों को ईसाई बनाने के लिए एक ही हथियार है और वह यही जीवित रहने का मामला है। वे कहते हैं कि यह विशेषता किसी दूसरे में सिद्ध करो। यदि वह ख़ुदा नहीं तो फिर क्यों उसे यह विशेषता दी गई? वह जीवित रहने वाला और क़ायम रहने वाला है (नऊज़ुबिल्लाह मिन ज़ालिक) इस जीवित रहने के मामले ने उन्हें दिलेर कर दिया और उन्होंने मुसलमानों पर वह प्रहार किया जिसका परिणाम मैं तुम्हें बता चुका हूं। अब इस के मुक़ाबले पर तुम पादरियों पर यह सिद्ध कर दो कि **मसीह मर गया** है तो इसका परिणाम क्या होगा? मैंने बड़े-बड़े पादरियों से पूछा है। उन्होंने कहा है कि यह सिद्ध हो जाए कि मसीह मर गया है तो हमारा धर्म जीवित नहीं रह सकता।

एक और विचारणीय बात है कि मसीह के जीवित रहने की आस्था का तो आप ने अनुभव किया अब तनिक उस की मृत्यु का भी अनुभव करो और देखो कि **ईसाई धर्म** पर इस आस्था से क्या चोट पड़ती है। जहां कोई मेरा मुरीद ईसाइयों से इस विषय पर वार्तालाप करने के लिए खड़ा होता है वे तुरन्त इन्कार कर देते हैं। इसलिए कि वे जानते हैं कि इस मार्ग से उनका मरना करीब है। मौत के मामले से न उनका कफ़्फ़ारा सिद्ध हो सकता है और न उनकी ख़ुदाई और बेटा होना। अतः इस मामले का थोड़े दिनों तक अनुभव करो। फिर स्वयं वास्तविकता खुल जाएगी।

सुनो पवित्र क़ुर्आन और हदीसों में यह वादा था कि इस्लाम

फैल जाएगा और वह अन्य धर्मों पर विजयी हो जाएगा और सलीब टूटेगी। अब विचारणीय बात यह है कि दुनिया तो सामान का स्थान है। एक व्यक्ति बीमार हो तो इसमें तो सन्देह नहीं कि स्वस्थ तो अल्लाह तआला ही करता है परन्तु इसके लिए दवाओं में विशेषताएं भी उसी ने रख दी हैं। जब कोई दवाई दी जाती है तो वह फ़ायदा करती है। प्यास लगती है तो उसके बुझाने वाला तो ख़ुदा है परन्तु इसके लिए पानी भी उसी ने निर्धारित किया है। इसी प्रकार से भूख लगती है तो उसको दूर करने वाला वही है परन्तु भोजन भी उसी ने निर्धारित किया है। इस प्राकर से इस्लाम की विजय और कस्रे सलीब (सलीब-टूटना) तो होगा जो उसने निर्धारित किया है। परन्तु इसके लिए सामान निर्धारित किए हैं और एक क़ानून बनाया है। इसलिए पूर्ण सहमति से यह बात पवित्र क़ुर्आन और हदीसों के आधार पर स्वीकार कर ली गई है कि अन्तिम युग में जब ईसाइयत का प्रभुत्त्व होगा उस समय मसीह मौऊद के हाथ पर इस्लाम की विजय होगी और वे समस्त धर्मों तथा मिल्लतों पर इस्लाम को विजयी करके दिखा देगा और दज्जाल को क़त्ल करेगा और सलीब को तोड़ देगा, तथा वह युग अन्तिम युग होगा। नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ान और दूसरे बुज़ुर्गों ने जिन्होंने अन्तिम युग के बारे में पुस्तकें लिखी हैं उन्होंने भी इस बात को स्वीकार किया है। अब इस भविष्यवाणी के पूरा होने के लिए भी तो कोई कारण और माध्यम होगा। क्योंकि अल्लाह तआला की यह आदत है कि वह सामानों से काम लेता है। दवाओं से रोग दूर करता है और खाद्यपदार्थों तथा पानी से भूख-प्यास को दूर करता है। इस प्रकार से अब जबकि ईसाई धर्म का आधिपत्य हो गया है और

हर वर्ग के मुसलमान इस गिरोह में सम्मिलित हो चुके हैं। अल्लाह तआला ने इरादा किया है कि इस्लाम को अपने वादे के अनुसार विजयी करे। इसके लिए बहरहाल कोई माध्यम और कारण होगा और वह यही **मसीह की मृत्यु का शस्त्र है**। इस शस्त्र से सलीबी धर्म पर मृत्यु आएगी और उनकी कमरें टूट जाएंगी। मैं सच कहता हूं कि अब ईसाई ग़लतियों को दूर करने के लिए इस से बढ़कर क्या कारण हो सकता कि मसीह की मृत्यु सिद्ध की जाए। अपने घरों में इस बात पर विचार करें और अकेले में बिस्तरों पर लेट कर सोचें। विरोध की हालत में तो जोश आता है। नेक स्वभाव आदमी फिर सोच लेता है। देहली में जब मैंने लेक्चर दिया था तो नेक स्वभाव लोगों ने स्वीकार कर लिया और वहीं बोल उठे कि निस्सन्देह हज़रत ईसा की उपासना का स्तंभ उनका जीवित रहना है जब तक यह न टूटे इस्लाम के लिए दरवाज़ा नहीं खुलता अपितु इस से ईसाइयत को सहायता मिलती है। जो उन के जीवित रहने से प्रेम करते हैं उन्हें सोचना चाहिए कि दो गवाहों के माध्यम से फांसी मिल जाती है परन्तु यहां इतने गवाह मौजूद हैं और वे यथापूर्व इन्कार करते जाते हैं।

अल्लाह तआला पवित्र क़ुर्आन में फ़रमाता है -

يٰعِيْسٰٓى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَيَّ (आलेइमरान-56)

और फ़िर हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम का अपना इक़रार इसी पवित्र क़ुर्आन में मौजूद है

فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِىْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ (अलमाइदह-118)

और تَوَفِّى के मायने मौत भी पवित्र क़ुर्आन ही से सिद्ध है। क्योंकि यही शब्द आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर भी आया

है जैसा कि फ़रमाया है -

وَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِیْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ (यूनुस-47)

और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِیْ कहा है जिस के मायने मृत्यु ही हैं। और ऐसा ही हज़रत यूसुफ़[अ.] तथा अन्य लोगों के लिए भी यही शब्द आया है। फिर ऐसी स्थिति में इसके कोई अन्य मायने क्योंकर हो सकते हैं। यह बड़ी शक्तिशाली गवाही मसीह की मृत्यु पर है। इसके अतिरिक्त आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेराज की रात में हज़रत ईसा[अ.] को मुर्दों में देखा। मेराज की हदीस का तो कोई इन्कार नहीं कर सकता। उसे खोल कर देख लो कि क्या उसमें हज़रत ईसा का ज़िक्र मुर्दों के साथ आया है या किसी और रंग में। जैसे आप ने हज़रत इब्राहीम[अ.], मूसा[अ.], और अन्य अंबिया अलैहिस्सलाम को देखा उसी प्रकार हज़रत ईसा[अ.] को देखा। उनमें कोई विशेषता और अन्तर न था। इस बात से तो कोई इन्कार नहीं कर सकता कि हज़रत मूसा[अ.], इब्राहीम[अ.] और दूसरे अंबिया अलैहिमुस्सलाम मृत्यु पा चुके हैं और रूहों को क़ब्ज़ करने वाले ने उनको दूसरे लोक में पहुंचा दिया है। फिर उनमें एक व्यक्ति पार्थिव शरीर के साथ जीवित कैसे चला गया? ये साक्ष्यें कम नहीं हैं, एक सच्चे मुसलमान के लिए पर्याप्त हैं।

फिर दूसरी हदीसों में हज़रत ईसा[अ.] की आयु 120 या 125 वर्ष बताई गई है। इन सब बातों को इकट्ठे तौर पर दृष्टि डालने के बाद यह बात संयम के विरुद्ध थी कि झटपट यह फ़ैसला कर दिया जाता कि मसीह जीवित आकाश पर चला गया है और फिर उसका कोई उदाहरण भी नहीं। बुद्धि भी यही कहती थी कि अफ़सोस इन लोगों ने

थोड़ा सा भी विचार न किया। और ख़ुदा के भय से काम न लेकर तुरन्त मुझे दज्जाल कह दिया। सोचने की बात है कि क्या यह थोड़ी सी बात थी? अफ़सोस!

फिर जब कोई बहाना नहीं बन सकता तो कहते हैं कि मध्यकाल में इज्मा (सर्वसम्मति) हो चुका है। मैं कहता हूं कब? असल इज्मा तो सहाबा[रज़ि.] का इज्मा था। यदि उसके बाद इज्मा हुआ है तो अब उन विभिन्न फ़िर्क़ों को इकट्ठा करके दिखाओ। मैं सच कहता हूं कि यह बिल्कुल ग़लत बात है। मसीह[अ.] के जीवित रहने पर कभी इज्मा नहीं हुआ। इन्होंने पुस्तकों को नहीं पढ़ा अन्यथा उन्हें मालूम हो जाता कि सूफ़ी मौत के क़ाइल हैं और वे उनका पुनर्आगमन बुरूज़ी रंग में मानते हैं।

अतः जैसे मैंने अल्लाह तआला की स्तुति की है वैसे ही मैं आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजता हूं कि आप ही के लिए अल्लाह तआला ने इस सिलसिले को स्थापित किया है और आप ही की दानशीलता और बरकतों का परिणाम है जो ये सहायताएं हो रही हैं। मैं खोल कर कहता हूं और यही मेरी आस्था और मत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुकरण और पद चिन्हों पर चलने के बिना मनुष्य कोई रूहानी लाभ और अनुकम्पा प्राप्त नहीं कर सकता।

फिर इसके साथ ही एक और बात उल्लेखनीय है। यदि मैं उसको वर्णन न करूं तो कृतघ्नता होगी। और वह यह है कि अल्लाह तआला ने हमे ऐसी सरकार और हुकूमत में पैदा किया है जो हर प्रकार से अमन देती है और जिसने हम को अपने धर्म के प्रचार और

प्रसार के लिए पूर्ण स्वतंत्रता दी है और इस मुबारक काल में हमें हर प्रकार के सामान प्राप्त हैं। इस से बढ़कर और क्या स्वतंत्रता होगी कि हम ईसाई धर्म का खण्डन ज़ोर-शोर से करते हैं और कोई नहीं पूछता। परन्तु इस से पूर्व एक समय था उस समय के देखने वाले भी अब तक मौजूद हैं। उस समय यह हालत थी कि कोई मुसलमान अपनी मस्जिदों में अज़ान तक नहीं कह सकता था और बातों का तो ज़िक्र ही क्या है और वैध वस्तुओं के खाने से रोका जाता था। कोई नियमित रूप से जांच पड़ताल नहीं होती थी। परन्तु यह अल्लाह तआला की अनुकम्पा और उपकार है कि हम एक ऐसी सरकार के नीचे हैं जो इन समस्त दोषों से पवित्र है। अर्थात् अंग्रेज़ी सरकार जो शान्ति प्रिय है जिसका धार्मिक मतभेद से कोई ऐतराज़ नहीं, जिसका कानून है कि प्रत्येक धर्म वाला आज़ादी से अपने कर्त्तव्य अदा करे। चूंकि अल्लाह तआला ने इरादा किया है कि हमारा प्रचार हर स्थान पर पहुंच जाए। इसलिए उसने हमें इस सरकार में पैदा किया। जिस प्रकार आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नौशेरवां के काल पर गर्व करते थे इसी प्रकार हमें इस सरकार पर गर्व है। नियम की बात है कि मामूर चूंकि न्याय और सच्चाई लाता है इसलिए इस से पूर्व कि वह मामूर होकर आए न्याय और सच्चाई जारी होने लगती है। मैं विश्वास रखता हूं कि उस रूमी हुकूमत से जो मसीह के युग में थी यह हुकूमत प्रथम श्रेणी पर अत्युत्तम है यद्यपि इसका और उसका क़ानून मिलता-जुलता है। परन्तु इन्साफ़ यही है कि इस हुकूमत के कानून किसी से दबे हुए नहीं हैं और तुलना करके देखा जाए तो ज्ञात होगा कि रूमी हुकूमत में वहशियों जैसा भाग अवश्य पाया जाएगा।

परन्तु यह कायरता थी कि यहूदियों के भय से ख़ुदा के पवित्र और चुने हुए बन्दे मसीह को हवालात दी गई। इस प्रकार का मुक़द्दमा मुझ पर भी हुआ था, मसीह अलैहिस्सलाम के विरुद्ध तो यहूदियों ने मुक़द्दमा किया था परंतु इस सरकार में मेरे विरुद्ध जिसने मुक़द्दमा किया वह प्रतिष्ठित पादरी था और डॉक्टर भी था अर्थात् डॉक्टर मार्टिन क्लार्क था जिस ने मुझ पर क़त्ल करने का मुक़द्दमा बनाया और उसने पूरी गवाही उपलब्ध की यहां तक कि मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन बटालवी भी जो इस सिलसिले का कट्टर शत्रु है गवाही देने के लिए अदालत में आया और जहां तक उस से हो सका उसने मेरे विरुद्ध गवाही दी और पूर्ण रूप से मेरे विरुद्ध मुक़द्दमा सिद्ध करने का प्रयास किया। यह मुक़द्दमा कप्तान डगलस डिप्टी कमिश्नर गुरदासपुर की अदालत में था जो शायद अब शिमला में हैं। उनके सामने मुक़द्दमा पूर्ण रूप से तैयार हो गया और मेरे विरुद्ध समस्त गवाहियां बड़े ज़ोर-शोर से दी गईं। ऐसी हालत और स्थिति में कोई क़ानून जानने वाला विचारक भी नहीं कह सकता था कि मैं बरी हो सकता हूं। समय की मांग और परिस्थितियां ऐसी घटित हो चुकी थीं कि मुझे सेशन सुपुर्द कर दिया जाता और वहां से फांसी का आदेश मिलता या काले पानी का दण्ड मिलता। परन्तु ख़ुदा तआला ने जैसे मुक़द्दमा से पहले मुझे सूचना दी थी उसी प्रकार यह भी समय से पूर्व प्रकट कर दिया था कि मैं इसमें बरी हूंगा। अत: यह भविष्यवाणी मेरी जमाअत के एक बड़े समूह को मालूम थी। तो जब मुक़द्दमा इस पड़ाव पर पहुंचा और शत्रुओं एवं विरोधियों का यह विचार हो गया कि अब मुझे मजिस्ट्रेट सेशन के सुपुर्द करेगा। इस अवसर पर

उसने पुलिस कप्तान से कहा कि मेरे हृदय में यह बात आती है कि यह मुक़द्दमा बनावटी है। मेरा हृदय इस को नहीं मानता कि वास्तव में ऐसी कोशिश की गई हो और इन्होंने डॉक्टर क्लार्क के क़त्ल के लिए आदमी भेजा हो। आप इस की पुन: पड़ताल करें। यह वह समय था कि मेरे विरोधी मेरे विरुद्ध हर प्रकार की योजनाओं में ही न लगे हुए थे अपितु वे लोग जिन को दुआ की स्वीकारिता के दावे थे वे दुआओं में लगे हुए थे और रो-रोकर दुआएं करते थे कि मैं दण्डित हो जाऊं, परन्तु ख़ुदा तआला का मुकाबला कौन कर सकता है। मुझे मालूम है कि कप्तान डगलस साहिब के पास कुछ सिफ़ारिशें भी आईं परन्तु वह एक न्यायप्रिय मजिस्ट्रेट था। उसने कहा कि हम से ऐसी नीचता नहीं हो सकती।

अत: जब यह मुक़द्दमा दोबारा जांज-पड़ताल के लए कप्तान लीमारचन्द के सुपुर्द किया गया तो कप्तान साहिब ने अब्दुल हमीद को बुलाया और उसे कहा कि तू सच-सच बयान कर। अब्दुल हमीद ने इस पर भी वही क़िस्सा जो उसने डिप्टी कमिश्नर के सामने वर्णन किया था दोहराया, उसको पहले से यह कहा गया था कि यदि थोड़ा सा बयान के विरुद्ध होगा तो तू पकड़ा जाएगा। इसलिए वह वही कहता गया। परन्तु कप्तान साहिब ने उसको कहा कि तू तो पहले भी यही बयान कर चुका है साहिब इस से सन्तुष्ट नहीं होते क्योंकि तू सच-सच बयान नहीं करता। जब दोबारा कप्तान लीमार चन्द ने उसको कहा तो वह रोता हुआ उनके पैरों पर गिर पड़ा और कहने लगा कि मुझे बचा लो। कप्तान साहिब ने उसे सांत्वना दी और कहा कि हां बयान करो। इस पर उसने वास्तिवकता खोल दी साफ़

इक़रार किया कि मुझे धमका कर यह बयान कराया गया था मुझे मिर्ज़ा साहिब ने हरगिज़ हरगिज़ क़त्ल के लिए नहीं भेजा। कप्तान इस बयान को सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ और डिप्टी कमिश्नर को तार दिया कि हम ने मुक़द्दमा निकाल लिया है। तो फिर गुरदासपुर में यह मुक़द्दमा प्रस्तुत हुआ और वहां कप्तान लीमारचन्द को क़सम दी गई और उसने अपना हलफ़ी बयान लिखवाया। मैं देखता हूं कि डिप्टी कमिश्नर असलियत के खुल जाने पर बहुत प्रसन्न था और उन ईसाइयों पर उसे बहुत क्रोध था जिन्होंने मेरे विरुद्ध गवाहियां दी थीं। उसने मुझे कहा कि आप इन ईसाइयों पर मुक़द्दमा कर सकते हैं। परन्तु चूंकि मैं मुक़द्दमे बाज़ी से नफ़रत करता हूं मैंने यही कहा कि मैं मुक़द्दमा करना नहीं चाहता। मेरा **मुक़द्दमा आकाश पर दायर है**। इस पर उसी समय डगलस साहिब ने फ़ैसला लिखा। उस दिन एक बहुत बड़ा जमावड़ा हो गया था। **उसने फैसला सुनाते समय मुझे कहा कि आप को मुबारक हो आप बरी हुए।**

अब बताओ कि यह कैसी खूबी इस हुकूमत की है कि न्याय और इन्साफ़ के लिए अपने धर्म के एक प्रमुख की न परवाह की और न किसी अन्य बात की। मैं देखता था कि उस समय तो एक दुनिया मेरी शत्रु थी और ऐसा ही होता है जब दुनिया दुख देने पर आती है तो दरोदीवार डंक मारते हैं। ख़ुदा तआला ही होता है जो अपने सच्चे बन्दों को बचा लेता है।

फिर मिस्टर डोई के सामने एक मुक़द्दमा हुआ फिर टेक्स का मुक़द्दमा मुझ पर बनाया गया। परन्तु इन समस्त मुक़द्दमों में ख़ुदा तआला ने मुझे बरी ठहराया। फिर अन्त में करमदीन का मुक़द्दमा

हुआ। इस मुक़द्दमे में मेरे विरोध में सम्पूर्ण ज़ोर लगाया गया और यह समझ लिया गया था कि बस अब इस सिलसिले का अन्त है। और वास्तव में यदि ख़ुदा तआला की ओर से यह सिलसिला न होता और वही इसके समर्थन तथा सहायता के लिए खड़ा न होता तो इसके मिटने में कोई सन्देह और शंका ही न रही थी। देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक करमदीन की सहायता की गई और हर प्रकार से उसे मदद दी गई। यहां तक कि इस मुक़द्दमें में कुछ ने मौलवी कहला कर मेरे विरुद्ध वे गवाहियां दीं जो सर्वथा विरुद्ध थीं और यहां तक वर्णन किया कि व्यभिचारी हो, पापी हो, दुराचारी हो फिर भी वह संयमी होता है। यह मुक़द्दमा एक लम्बे समय तक होता रहा। इस बीच बहुत से निशान प्रकट हुए। अन्ततः मजिस्ट्रेट ने जो हिन्दू था मुझ पर पांच सौ रुपया जुर्माना कर दिया। परन्तु ख़ुदा तआला ने पहले से यह सूचना दी हुई थी।

"उच्च अदालत ने उसे बरी कर दिया।"

इसलिए जब वह अपील डिवीज़नल जज के सामने प्रस्तुत हुई तो उन्होंने ख़ुदा की दी हुई प्रतिभा से तुरन्त ही मुकद्दमे की वास्तविकता को समझ लिया और क़रार दिया कि करमदीन के बारे में मैंने जो कुछ लिखा था वह बिल्कुल सही था। अर्थात् मुझे उसके लिखने का अधिकार प्राप्त था। तो उसने जो फ़ैसला लिखा है वह प्रकाशित हो चुका है। अन्ततः उसने मुझे बरी ठहराया और जुर्माना वापस किया और प्रारंभिक अदालत को भी उचित चेतावनी दी कि यह मुक़द्दमा इतनी देर तक क्यों रखा गया।

निष्कर्ष यह कि जब कोई अवसर मेरे विरोधियों को मिला है

उन्होंने मेरे कुचल देने और मार देने में कोई कमी शेष नहीं रखी तथा कोई कसर नहीं छोड़ी। परन्तु ख़ुदा तआला ने केवल अपनी कृपा से मुझे हर आग से बचाया उसी प्रकार जिस प्रकार वह अपने रसूलों को बचाता आया है। मैं इन घटनाओं को दृष्टिगत रख कर बड़े ज़ोर से कहता हूं कि यह सरकार रूमी सरकार की अपेक्षा उत्तम है जिस के समय में मसीह को दुख दिया गया। पैलातूस गवर्नर जिसके सामने पहले मुक़द्दमा प्रस्तुत हुआ वह वास्तव में मसीह का मुरीद था और उस की पत्नी भी मुरीद थी। इस कारण से उस ने मसीह के ख़ून से हाथ धोए परन्तु मुरीद होने के बावजूद गवर्नर था उसने उस साहस से काम न लिया जो कप्तान डगलस ने दिखाया। वहां भी मसीह निर्दोष था और यहां भी मैं निर्दोष था।

मैं सच-सच कहता हूं और अनुभव से कहता हूं कि अल्लाह तआला ने इस क़ौम को सच्चाई के लिए एक साहस दिया है। अत: मैं यहां मुसलमानों को नसीहत करता हूं कि उन पर अनिवार्य है कि वे सच्चे दिल से सरकार की आज्ञा का पालन करें।

यह भली भांति स्मरण रखो कि जो व्यक्ति अपने उपकारी मनुष्य का कृतज्ञ नहीं होता वह ख़ुदा तआला का भी धन्यवाद नहीं कर सकता। जितना सुख और आराम इस युग में प्राप्त है उसका उदाहरण नहीं मिलता। रेल, तार, डॉकखाना और पुलिस इत्यादि के प्रबंध को देखो कि इन से कितने लाभ पहुंचते हैं। आज से साठ-सत्तर वर्ष पहले बताओ क्या ऐसा आराम और आसानी थी? फिर स्वयं ही इन्साफ़ करो कि जब हम पर हज़ारों उपकार हैं तो हम क्योंकर धन्यवाद न करें। अधिकांश मुसलमान मुझ पर आक्रमण करते हैं कि तुम्हारे सिलसिले

में यह दोष है कि तुम जिहाद को स्थगित करते हो। अफ़सोस है कि वे मूर्ख इस वास्तविकता से मात्र अपरिचित हैं। वे इस्लाम और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बदनाम करते हैं। आप ने कभी इस्लाम के प्रसार के लिए तलवार नहीं उठाई। जब आप और आपकी जमाअत पर विरोधियों के अत्याचार चरम सीमा तक पहुंच गए और आप के प्रिय सेवकों में से पुरुषों तथा स्त्रियों को शहीद कर दिया गया और फिर मदीना तक आप का पीछा किया गया उस समय मुकाबला करने का आदेश मिला। आप ने तलवार नहीं उठाई। परंतु विरोधियों ने तलवार उठाई और आप को अत्याचारी प्रकृति रखने वाले काफ़िरों ने सर से पांवों तक रक्तरंजित कर दिया था, परन्तु आप ने कभी मुक़ाबला नहीं किया। ख़ूब याद रखो कि यदि तलवार इस्लाम का कर्त्तव्य होता तो आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का में उठाते। परन्तु नहीं वह तलवार जिसकी चर्चा है वह उस समय उठी जब दुष्ट काफ़िरों ने मदीना तक पीछा किया। उस समय विरोधियों के हाथ में तलवार थी परन्तु अब तलवार नहीं है और मेरे विरुद्ध झूठी जासूसियों और फ़त्वों से काम लिया जाता है तथा इस्लाम के विरुद्ध केवल क़लम से काम लिया जाता है। फिर कलम का उत्तर तलवार से देने वाला मूर्ख और अत्याचारी होगा या कुछ और?

इस बात को मत भूलो कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने काफ़िरों के असीमित अत्याचार पर तलवार उठाई और वह आत्मरक्षा थी जो प्रत्येक सभ्य सरकार के क़ानून में भीजुर्म नहीं और हिंदुस्तान के क़ानून में भी आत्मरक्षा को वैध रखा गया है। यदि एक चोर घर में घुस आए और वह आक्रमण करके मार डालना

चाहता है उस समय उस चोर को अपने बचाव के लिए मार डालना अपराध नहीं है।

तो जब हालत यहां तक पहुंची कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जान न्योछावर करने वाले सेवक शहीद कर दिए गए और कमज़ोर मुसलमान स्त्रियों तक को बड़ी निर्दयता और निर्लज्जता के साथ शहीद कर दिया गया। तो क्या अधिकार न था कि उनको दण्ड दिया जाता। उस समय यदि अल्लाह तआला का यह इरादा होता कि इस्लाम का नामोनिशान न रहे तो यद्यपि यह हो सकता था कि तलवार का नाम न आता। परन्तु वह चाहता था कि इस्लाम दुनिया में फैले और दुनिया की मुक्ति का माध्यम हो। इसलिए उस समय केवल आक्रमण से बचाव के लिए तलवार उठाई गई। मैं दावे से कहता हूं कि उस समय इस्लाम का तलवार उठाना किसी क़ानून धर्म और शिष्टाचार की दृष्टि से आरोप के योग्य नहीं ठहरता। वे लोग जो एक गाल पर थप्पड़ खा कर दूसरा गाल फेर देने की शिक्षा देते हैं वे भी सब्र नहीं कर सकते और जिन के यहां कीड़े का मारना भी पाप समझा जाता है वे भी नहीं कर सकते। फिर इस्लाम पर आरोप क्यों लगाया जाता है?

मैं यह भी खोलकर कहता हूं कि मूर्ख मुसलमान कहते हैं कि इस्लाम तलवार के द्वारा फैला है वे निर्दोष नबी अलैहिस्सलातुवस्सलाम पर झूठ बांधते हैं और इस्लाम का अपमान करते हैं। ख़ूब याद रखो कि इस्लाम हमेशा अपनी पवित्र शिक्षा, हिदायत, अपने प्रकाशों तथा बरकतों के फलों और चमत्कारों से फैला है। आहंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महान निशान, आप के शिष्टाचार के पवित्र

प्रभावों ने इसे फैलाया है। और वे निशान तथा प्रभाव समाप्त नहीं हो गए हैं अपितु हमेशा और प्रत्येक युग में ताज़ा से ताज़ा मौजूद रहते हैं। यही कारण है जो मैं कहता हूं कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़िन्दा नबी हैं।

इसलिए कि आप की शिक्षाएं और हिदायतें सदैव अपने फल देती रहती हैं और भविष्य में जब इस्लाम उन्नति करेगा तो उसका यही मार्ग होगा न कोई और। तो जब इस्लाम को फैलाने के लिए कभी तलवार नहीं उठाई गई तो इस समय ऐसा सोचना भी पाप है। क्योंकि अब तो सब के सब अमन से बैठे हुए हैं और अपने धर्म के प्रसार के लिए पर्याप्त माध्यम तथा सामान मौजूद हैं।

मुझे बड़े ही अफ़सोस से कहना पड़ता है कि ईसाइयों और दूसरे ऐतराज़ करने वालों ने इस्लाम पर आक्रमण करते समय हरगिज़-हरगिज़ वास्विकता पर विचार नहीं किया। वे देखते कि उस समय समस्त विरोधी इस्लाम और मुसलमानों के समूल विनाश की घात में थे। और सब के सब मिलकर उसके विरुद्ध योजनाएं बनाते और मुसलमानों को दुख देते थे। उन दुखों और कष्टों के मुकाबले में वे यदि अपने प्राण न बचाते तो क्या करते। पवित्र क़ुर्आन में यह आयत मौजूद है-

اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا (अलहज-40)

इससे ज्ञात होता है कि यह आदेश उस समय दिया गया जबकि मुसलमानों पर अत्याचार की बहुतात हो गई तो उन्हें मुक़ाबला करने का आदेश दिया गया। उस समय की यह इजाज़त थी दूसरे समय के लिए यह आदेश न था। अत: मसीह मौऊद के लिए यह निशान

ठहराया गया يَضَعُ الْحَرْبَ अब तो उसकी सच्चाई का यह निशान है कि वह लड़ाई न करेगा। इसका कारण यही है कि इस युग में विरोधियों ने भी धार्मिक लड़ाइयां छोड़ दीं। हां इस मुकाबले ने एक और रूप एवं रंग ग्रहण कर लिया है और वह यह है कि क़लम से काम लेकर इस्लाम पर ऐतराज़ कर रहे हैं। ईसाई हैं कि उन का एक-एक अखबार पचास-पचास हज़ार निकलता है और हर प्रकार से कोशिश करते हैं कि लोग इस्लाम से विमुख हो जाएं। इसलिए इस मुकाबले के लिए हमें क़लम से काम लेना चाहिए या तीर चलाने चाहिए? इस समय तो यदि कोई ऐसा विचार करे तो उस से अधिक मूर्ख और इस्लाम का शत्रु और कौन होगा? इस प्रकार का नाम लेना इस्लाम को बदनाम करना हैं या कुछ और? जब हमारे विरोधी इस प्रकार का प्रयास नहीं करते, हालांकि वे सच पर नहीं तो फिर कैसा आश्चर्य और खेद होगा कि यदि हम सच पर होकर तलवार का नाम लें। इस समय तुम किसी को तलवार दिखा कर कहो कि मुसलमान हो जा अन्यथा क़त्ल कर दूंगा। फिर देखो परिणाम क्या होगा? वह पुलिस में गिरफ़्तार करा के तलवार का स्वाद चखा देगा।

ये विचार सर्वथा व्यर्थ हैं इनको सरों से निकाल देना चाहिए। अब समय आया है कि इस्लाम का प्रकाशमान और चमकदार चेहरा दिखाया जाए। यह वह युग है कि समस्त आरोपों का निवारण कर दिया जाए। और जो इस्लाम के प्रकाशमय चेहरे पर दाग़ लगाया गया है उसे दूर करके दिखाया जाए। मैं यह भी अफ़सोस के साथ व्यक्त करता हूं कि मुसलमानों के लिए जो मार्ग खुदा तआला ने दिया है और ईसाई धर्म के इस्लाम में दाखिल करने के लिए जो रास्ता खोला

गया था उसे ही बुरी दृष्टि से देखा और उसका कुफ्र किया।

मैंने अपने लेखों के द्वारा पूर्णरूप से इस तरीक़े को प्रस्तुत किया है जो इस्लाम को सफल और दूसरे धर्मों पर विजयी करने वाला है। मेरी पुस्तकें यूरोप और अमरीका में जाती हैं ख़ुदा तआला ने इस क़ौम को जो प्रतिभा दी है उन्होंने उस ख़ुदा द्वारा प्रदत्त प्रतिभा से इस बात को समझ लिया है, परन्तु जब एक मुसलमान के सामने में उसे प्रस्तुत करता हूं तो उसके मुंह में झाग आ जाता है जैसे वह दीवाना है या क़त्ल करना चाहता है। हालांकि पवित्र क़ुर्आन की शिक्षा तो यही थी -

اِدْفَعْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ (हाम्मीम अस्सज्दह-35)

यह शिक्षा इसलिए थी कि यदि शत्रु भी हो तो वह नर्मी और सद्व्यवहार से दोस्त बन जाए और इन बातों को आराम और शान्तिपूर्वक सुन ले। **मैं अल्लाह तआला की क़सम खाकर कहता हूं कि मैं उसकी ओर से हूं।** वह ख़ूब जानता है मैं मुफ़्तरी नहीं, कज़्ज़ाब नहीं। यदि तुम मुझे ख़ुदा तआला की क़सम पर भी और उन निशानों को भी जो उसने मेरे समर्थन में प्रकट किए देखकर मुझे झूठा और मुफ़्तरी कहते हो तो फिर मैं तुम्हें ख़ुदा तआला की क़सम देता हूं कि किसी ऐसे मुफ़्तरी का उदाहरण प्रस्तुत करो कि उसके प्रतिदिन ख़ुदा तआला पर इफ़्तिरा और झूठ गढ़ने के बावजूद फिर अल्लाह तआला उसका समर्थन और सहायता करता चला जाए। चाहिए तो यह था कि उसे मार दे। परन्तु यहां इसके विपरीत मामला है। मैं ख़ुदा तआला की क़सम खा कर कहता हूं कि **मैं सच्चा हूं और उसकी ओर से आया हूं।** परन्तु मुझे झूठा और मुफ़्तरी कहा जाता है। और फिर अल्लाह तआला हर मुक़द्दमे और हर विपत्ति

जो क़ौम मेरे विरुद्ध पैदा करती है मुझे सहायता देता है और उस से मुझे बचाता है और फिर ऐसी सहायता की कि लाखों मनुष्यों के दिल में मेरे लिए प्रेम डाल दिया। मैं इस पर अपनी सच्चाई को निर्भर करता हूं। यदि तुम किसी ऐसे मुफ़्तरी का निशान दे दो कि वह झूठा हो और उसने अल्लाह तआला पर झूठ बांधा हो और फिर अल्लाह तआला ने उसकी ऐसी सहायताएं की हों तथा इतने समय तक उसे जीवित रखा हो और उसकी कामनाओं को पूर्ण किया हो दिखाओ।

निश्चित समझो कि ख़ुदा तआला के मुर्सल (भेजे हुए) उन निशानों और समर्थनों से पहचाने जाते हैं जो ख़ुदा तआला उनके लिए दिखाता और उनकी सहायता करता है। मैं अपने कथन में सच्चा हूं और ख़ुदा तआला जो दिलों को देखता है वह मेरे दिल की हालतों से परिचित और अवगत है। क्या तुम इतना भी नहीं कह सकते जो आले फ़िरऔन के एक आदमी ने कहा था -

وَاِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ ۚ وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا
يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِىْ يَعِدُكُمْ ؕ (अलमोमिन-29)

क्या तुम यह विश्वास नहीं करते कि अल्लाह तआला झूठों का सबसे बड़ा दुश्मन है। तुम सब मिलकर मुझ पर जो आक्रमण करो ख़ुदा तआला का प्रकोप उस से कहीं बढ़कर होता है। फिर उसके प्रकोप से कौन बचा सकता है। और यह आयत जो मैंने पढ़ी है इसमें यह नुक्त: भी स्मरण रखने योग्य है कि अज़ाब के वादे की कुछ भविष्यवाणियां पूरी कर देगा कुल (समस्त) नहीं कहा। इसमें हिकमत क्या है? हिकमत यही है कि अज़ाब के वादे की भविष्यवाणियां शर्त के साथ होती हैं। वे तौब:, क्षमा-याचना और सच की ओर लौटने

से टल जाया करती हैं।

भविष्यवाणी दो प्रकार की होती है, एक वादे की जैसे फ़रमाया

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ (अन्नूर-56)

अहले सुन्नत मानते हैं कि इस प्रकार की भविष्यवाणियों में वादा भंग होना नहीं होता क्योंकि ख़ुदा तआला करीम (कृपालु) है, परन्तु अज़ाब के वादे की भविष्यवाणियों में वह डरा कर क्षमा भी कर देता है, इसलिए वह दयालु है। बड़ा मूर्ख और इस्लाम से दूर पड़ा हुआ है वह व्यक्ति जो कहता है कि अज़ाब की सब भविष्यवाणियां पूरी होती हैं वह पवित्र क़ुर्आन को छोड़ता है। इसलिए कि पवित्र क़ुर्आन तो कहता है -

يُصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِىْ يَعِدُكُمْ (अलमोमिन-29)

अफ़सोस है बहुत से लोग मौलवी कहलाते हैं परन्तु न उन्हें क़ुर्आन की खबर है, न हदीस की, न नबियों की सुन्नत की। केवल वैर का झाग होता है। इसलिए वे धोखा देते हैं। स्मरण रखो कि اَلْكَرِيْمُ اِذَا وَعَدَ وَفٰى रहीम (दयालु) की मांग यही है कि दण्डनीय ठहराकर माफ़ कर देता है और यह तो मनुष्य के भी स्वभाव में है कि वह माफ़ कर देता है। एक बार मेरे सामने एक व्यक्ति ने बनावटी गवाही दी उस पर अपराध सिद्ध था। वह मुक़द्दमा एक अंग्रेज़ के पास था उसे संयोग से चिट्ठी आ गई कि किसी दूर के स्थान पर स्नानान्तरण हो गया है। वह दुखी हुआ जो अपराधी था वह बूढ़ा आदमी था। मुंशी से कहा कि यह तो जेल में ही मर जाएगा। उसने भी कहा कि हुज़ूर बाल-बच्चों वाला है। इस पर वह अंग्रेज़ बोला कि

अब मिस्ल समपादित हो चुकी है। अब क्या हो सकता है। फिर कहा कि अच्छा इस मिस्ल को फाड़ दो। अब विचार करो कि अंग्रेज़ को तो दया आ सकती है ख़ुदा तआला को नहीं आती?

फिर इस बात पर भी विचार करो कि सदक़ा और ख़ैरात (दान-पुण्य) क्यों जारी है और प्रत्येक क़ौम में इस का रिवाज है स्वाभाविक तौर पर इन्सान संकट और बला क समय सदक़ा (दान) देना चाहता है और दान करता है और कहते हैं कि बकरे दो, कपड़े दो, यह दो, वह दो। यदि इसके द्वारा बला का रद्द नहीं होता तो फिर मनुष्य विवश होकर ऐसा क्यों करता है? नहीं बला का रद्द होता है। एक लाख चौबीस हज़ार पैग़म्बर की सहमति से यह बात सिद्ध है और मैं निस्सन्देह जानता हूं कि यह केवल मुसलमानों का ही मत नहीं अपितु यहूदियों, ईसाइयों और हिन्दुओं का भी यह मत है और मेरी समझ में समस्त पृथ्वी पर कोई इस बात का इन्कारी ही नहीं जब कि यह बात है तो साफ खुल गया कि वह ख़ुदा का इरादा टल जाता है।

भविष्यवाणी और ख़ुदा के इरादे में केवल यह अन्तर होता है कि भविष्यवाणी की सूचना नबी को दी जाती है और ख़ुदा के इरादे पर किसी को सूचना नहीं होती और वह गुप्त रहता है। यदि वही ख़ुदा का इरादा नबी के माध्यम से प्रकट कर दिया जाता तो वह भविष्यवाणी होती। यदि भविष्यवाणी नहीं टल सकती तो फिर ख़ुदा तआला का इरादा भी सदक़ा और ख़ैरात से नहीं टल सकता। परन्तु यह बिल्कुल ग़लत है। चूंकि अज़ाब की भविष्यवाणियां टल जाती हैं। इसलिए फ़रमाया -

وَاِنۡ یَّکُ صَادِقًا یُّصِبۡکُمۡ بَعۡضُ الَّذِیۡ یَعِدُکُمۡ ؕ

(अलमोमिन-29)

अब अल्लाह तआला स्वयं गवाही देता है कि कुछ भविष्यवाणियां आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की भी टल गईं। यदि मेरी किसी भविष्यवाणी पर ऐसा ऐतराज़ किया जाता है तो मुझे इसका उत्तर दो। यदि इस बात में मुझे झुठलाओगे तो मुझे नहीं अपितु अल्लाह तआला को झुठलाने वाले ठहरोगे। मैं बड़े विश्वास पूर्वक कहता हूं कि यह समस्त अहले सुन्नत जमाअत तथा समस्त संसार का मान्य मामला है कि गिड़गिड़ाने से अज़ाब का वादा टल जाया करता है। क्या हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम का उदाहरण भी तुम भूल गए हो? हज़रत यूनुस की क़ौम से जो अज़ाब टलगया था उसका क्या कारण था? 'दुर्रे मन्सूर' इत्यादि को देखो और बाइबल में यूना नबी की किताब मौजूद है। उस अज़ाब का अटल वादा था, परन्तु यूनुस की क़ौम ने अज़ाब के लक्षण देख कर तौब: की और उसकी ओर रुजू किया। ख़ुदा तआला ने उसे क्षमा कर दिया और अज़ाब टल गया। उधर हज़रत यूनुस अ. निर्धारित दिन पर अज़ाब के प्रतीक्षक थे। लोगों से सूचनाएं मालूम करते थे। एक ज़मींदार से पूछा कि नेनवा का क्या हाल है? उसने कहा कि अच्छा हाल है। तो हज़रत यूनुस अ. पर बहुत ग़म छा गया और उन्होंने कहा لَنْ اَرْجِعَ اِلٰى قَوْمِى كَذَّابًا अर्थात् मैं अपनी क़ौम की ओर महा झूठा कहला कर नहीं जाऊंगा। अब इस उदाहरण के होते हुए और पवित्र क़ुर्आन की शक्तिशाली गवाही की मौजूदगी में मेरी ऐसी किसी भविष्यवाणी पर जो पहले ही से शर्त वाली थी ऐतराज़ करना संयम के विरुद्ध है। सयंमी की यह निशानी नहीं कि बिना सोचे-समझे मुंह से बात निकाल दे और झुठलाने पर तत्पर हो जाए।

हज़रत यूनुस [अ.] का क़िस्सा अत्यन्त कष्टदायक और नसीहत देने वाला है और वह किताबों में लिखी हुआ है उसे ध्यानपूर्वक पढ़ो। यहां तक कि वह दरिया में गिराए गए और मछली के पेट में गए तब तौबः स्वीकार हुई। यह दण्ड और क्रोध हज़रत यूनुस [अ.] पर क्यों हुआ? इसलिए कि उन्होंने ख़ुदा तआला को शक्तिमान न समझा कि वह वादे की भविष्यवाणी को टाल देता है फिर तुम लोग मेरे बारे में क्यों जल्दी करते हो? और मुझे झुठलाने के लिए समस्त सच्चे नबियों को झुठलाते हो?

स्मरण रखो कि ख़ुदा तआला का नाम ग़फ़ूर (क्षमा करने वाला) है। फिर वह क्यों रुजू करने वालों को क्षमा न करे। इस प्रकार की ग़लतियां हैं जो क़ौम में पैदा हो गई हैं। इन्ही ग़लतियों में से जिहाद की ग़लती भी है। मुझे आश्चर्य है कि जब मैं कहता हूं कि जिहाद अवैध है तो काली-पीली आंखें निकाल लेते हैं। हालांकि स्वयं ही मानते हैं कि जो हदीसें खूनी महदी की हैं वे भयानक हैं। मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने इस बारे में पुस्तकें लिखी हैं और यही मत मियां नज़ीर हुसैन देहलवी का था। वे उनको बिल्कुल सही नहीं समझते फिर क्यों झूठा कहा जाता है। सच्ची बात यही है कि मसीह मौऊद और महदी का कार्य यही है कि वह लड़ाइयों के सिलसिले को बन्द करेगा और कलम, दुआ, ध्यान से इस्लाम का बोल बाला करेगा। अफसोस है कि लोगों को यह बात समझ नहीं आती। इसलिए कि जितना ध्यान दुनिया की ओर है धर्म की ओर नहीं। दुनिया की गन्दगियों और मलिनताओं में लिप्त होकर यह आशा क्योंकर कर सकते हैं कि उन पर पवित्र क़ुर्आन के अध्यात्म ज्ञान खुलें। वहां तो

साफ़ लिखा है -

لَا يَمَسُّهٗ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ (अवाक़िअ:80)

इस बात को भी दिल से सुनो कि मेरे अवतरित होने का मुख्य कारण क्या है? मेरे आने का उद्देश्य और अभीष्ट केवल इस्लाम का नवीनीकरण और सहायता करना है। इस से यह नहीं समझना चाहिए कि मैं इसलिए आया हूं कि कोई नई शरीअत सिखाऊं या नए आदेश दूं या कोई नई किताब उतरेगी। कदापि नहीं। यदि कोई व्यक्ति यह सोचता है तो वह मेरे नज़दीक बड़ा गुमराह और नास्तिक है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर शरीअत और नुबुव्वत का अन्त हो चुका है। अब कोई शरीअत नहीं आ सकती। पवित्र क़ुर्आन ख़ातमुल कुतुब है। इसमें अब एक अक्षर या बिन्दु की भी न्यूनधिकता की गुंजायश नहीं है। हां यह सच है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बरकतें और दानशीलतएं और पवित्र क़ुर्आन की शिक्षा और मार्ग-दर्शन के फलों का अन्त नहीं होगा। वे हर युग में ताज़ा से ताज़ा मौजूद हैं। और इन्हीं दानशीलताओं और बरकतों के प्रमाण के लिए ख़ुदा तआला ने मुझे खड़ा किया है। इस्लाम की जो हालत इस समय है वह छुपी हुई नहीं। सर्वसहमति से स्वीकार कर लिया गया है कि हर प्रकार की कमज़ोरियों और पतन का निशाना मुसलमान हो रहे हैं। प्रत्येक पहलू से वे गिर रहे हैं। उनकी जीभ साथ है तो दिल नहीं है और इस्लाम अनाथ हो गया है। ऐसी हालत में अल्लाह तआला ने मुझे भेजा है कि मैं उसकी हिमायत और सरपरस्ती करूँ और अपने वादे के अनुसार भेजा है। क्योंकि उस ने फ़रमाया था -

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحَافِظُوْنَ (अलहिज्र-10)

यदि इस समय सहायता, मदद और सुरक्षा न की जाती तो वह और कौन सा समय आएगा? अब इस चौदहवीं सदी में वही हालत हो रही है जो बद्र के अवसर पर हो गई थी, जिसके लिए अल्लाह तआला फ़रमाता है -

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ (आले इमरान-124)

इस आयत में भी वास्तव में एक भविष्यवाणी केन्द्रित थी अर्थात् जब चौदहवीं सदी में इस्लाम कमज़ोर और अशक्त हो जाएगा उस समय अल्लाह तआला इस सुरक्षा के वादे के अनुसार उसकी सहायता करेगा। फिर तुम क्यों आश्चर्य करते हो कि उसने इस्लाम की सहायता की? मुझे इस बात का अफ़सोस नहीं कि मेरा नाम दज्जाल और कज़्ज़ाब रखा जाता है और मुझ पर झूठे आरोप लगाए जाते हैं इसलिए कि यह अवश्य था कि मेरे साथ वही व्यवहार होता जो मुझ से पहले ख़ुदा के भेजे हुए लोगों के साथ हुआ ताकि मैं भी एक अनश्वर सुन्नत से हिस्सा पाता। मैंने तो इन संकटों एवं अत्याचारों का कुछ भी हिस्सा नहीं पाया। परन्तु जो संकट और कठिनाइयां हमारे सय्यद-व-मौला आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मार्ग में आईं उसका उदाहरण नबियों के सिलसिले में किसी के लिए नहीं पाया जाता। आप ने इस्लाम के लिए वे दुख उठाए कि क़लम उनके लिखने और जीभ उनका वर्णन करने से असमर्थ हैं। इसी से ज्ञात होता है आप कैसे प्रतापी और दृढ़ संकल्प नबी थे। यदि ख़ुदा तआला का समर्थन और सहायता आप के साथ न होती तो इन कठिनाइयों के पर्वत को उठाना असंभव हो जाता तथा यदि कोई और नबी होता तो वह भी रह जाता। परन्तु जिस इस्लाम को ऐसे संकटों और दुखों

के साथ आप ने फैलाया था आज उसका जो हाल हो गया है वह मैं कैसे कहूं?

इस्लाम के मायने तो यह थे कि मनुष्य ख़ुदा तआला के प्रेम और आज्ञापालन में फ़ना हो जाए। और जिस प्रकार से एक बकरी की गर्दन क़साई के आगे होती है इसी प्रकार से मुसलमान की गर्दन ख़ुदा तआला के आज्ञापालन के लिए रख दी जाए और इस का उद्देश्य यह था कि ख़ुदा तआला ही को एक और भागीदार रहित समझे। जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अवतरित हुए उस समय यह तौहीद गुम हो गई थी और यह आर्यवर्त देश भी मूर्तियों से परिपूर्ण था, जैसा कि पंडित दयानन्द सरस्वती ने भी इसे स्वीकार किया है। ऐसी अवस्था तथा ऐसे समय में अवश्य था कि आप अवतरित होते। उसका समरंग यह युग भी है जिस में मूर्ति पूजा के साथ इन्सान पूजा और नास्तिकता भी फैल गई है, और इस्लाम का मूल उद्देश्य और रूह शेष नहीं रही उसका सार तो यह था कि ख़ुदा के ही प्रेम में फ़ना हो जाता और उसके अतिरिक्त किसी को उपास्य (माबूद) न समझता। और उद्देश्य यह है कि मनुष्य ख़ुदा की ओर मुख करने वाला हो जाए दुनिया की ओर मुख करने वाला न रहे। इस उद्देश्य के लिए इस्लाम ने अपनी शिक्षा के दो भाग किए हैं -

प्रथम- अल्लाह के अधिकार

द्वितीय- बन्दों के अधिकार

अल्लाह का अधिकार यह है कि उसे आज्ञापालन के योग्य समझे और बन्दों का अधिकार यह है कि ख़ुदा की सृष्टि से हमदर्दी करे। यह तरीक़ा अच्छा नहीं कि धार्मिक विरोध के कारण किसी को

दुख दें। हमदर्दी और व्यवहार अलग बात है और धर्म का विरोध दूसरी बात। मुसलमानों का वह गिरोह जो जिहाद की ग़लती और बोधभ्रम में ग्रस्त हैं उन्होंने यह भी वैध रखा है कि काफ़िरों के माल अवैध तौर पर लेना भी सही है। स्वयं मेरे बारे में भी इन लोगों ने फ़त्वा दिया कि इन का माल लूट लो अपितु यहां तक भी कि इनकी पत्नियां निकाल लो। हालांकि इस्लाम में इस प्रकार की अपवित्र शिक्षाएं न थीं। वह तो एक साफ़ और उज्ज्वल धर्म था। इस्लाम का उदाहरण हम यों दे सकते हैं कि जैसे पिता अपने पितृत्व के अधिकारों को चाहता है इसी प्रकार वह चाहता है कि सन्तान में एक दूसरे के साथ हमदर्दी हो। वह नहीं चाहता कि एक दूसरे को मारे। इस्लाम भी जहां यह चाहता है कि ख़ुदा तआला का कोई भागीदार न हो वहां उसका यह भी उद्देश्य है कि मानव जाति में प्रेम और एकता हो।

नमाज़ में जमाअत का जो अधिक पुण्य रखा है उसमें यही उद्देश्य है कि एकता पैदा होती है और फिर उस एकता को व्यावहारिक रूप में लाने की यहां तक हिदायत और ताकीद है कि परस्पर पावों भी समान हों और पंक्ति सीधी हो और एक दूसरे से मिले हुए हों। इस से तात्पर्य यह है कि जैसे एक ही मनुष्य का आदेश रखें और एक के प्रकाश दूसरे में समा सकें। वह विवेक जिस से स्वार्थ परायणता पैदा होती है न रहे।

यह भलीभांति स्मरण रखो कि मनुष्य में यह शक्ति है कि वह दूसरे के प्रकाशों को खींचता है। फिर इसी एकता के लिए आदेश है कि मुहल्ले की मस्जिद में प्रतिदिन नमाज़ें और सप्ताह के बाद शहर की मस्जिद में और फिर वर्ष के बाद ईदगाह में एकत्र हों और

समस्त संसार के मुसलमान वर्ष में एक बार बैतुल्लाह में एकत्र हों। इन समस्त आदेशों का उददेश्य वही एकता है।

अल्लाह तआला ने अधिकारों के दो ही भाग रखे हैं। एक अल्लाह के अधिकार दूसरे बन्दों के अधिकार इस पर बहुत कुछ पवित्र कुर्आन में वर्णन किया गया है एक स्थान पर अल्लाह तआला फ़रमाता है

فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ اَوْ اَشَدَّ ذِكْرًا (अलबक़रह-201)

अर्थात अल्लाह तआला को स्मरण करो कि जिस प्रकार तुम अपने बाप-दादा को स्मरण करते हो अपितु उस से भी बढ़कर। यहां दो संकेत हैं। एक तो अल्लाह तआला के स्मरण को बाप-दादों के स्मरण से समानता दी है इसमें यह भेद है कि बाप-दादों का व्यक्तिगत प्रेम स्वाभाविक प्रेम होता है। देखो बच्चे को जब मां मारती है वह उस समय भी मां-मां ही पुकारता है जैसे इस आयत में अल्लाह तआला मनुष्य को ऐसी शिक्षा देता है कि वह ख़ुदा तआला से स्वाभाविक प्रेम का संबंध पैदा करे। इस प्रेम के बाद ख़ुदा के आदेशों का आज्ञापालन स्वयं पैदा हो जाता है। यही वह असल स्थान मारिफ़त का है जहां मनुष्य को पहुंचना चाहिए अर्थात् उसमें अल्लाह के लिए स्वाभाविक और व्यक्तिगत प्रेम पैदा हो जाए। एक अन्य स्थान पर यों फ़रमाता है -

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَ الْاِحْسَانِ وَ اِيْتَآءِ ذِى الْقُرْبٰى (अन्नहल-91)

इस आयत में उन तीन सोपानों का वर्णन किया जो मनुष्य को प्राप्त करने चाहिए। पहला सोपान न्याय का है। और न्याय यह है कि मनुष्य किसी से कोई नेकी करे बदले की शर्त पर। और यह स्पष्ट बात

है कि ऐसी नेकी कोई उच्च स्तर की बात नहीं अपितु सब से निचला स्तर यह है कि न्याय करो। और यदि इस पर उन्नति करो तो फिर वह इहसान (उपकार) की श्रेणी है। अर्थात् बिना बदले के व्यवहार करो। परन्तु यह बात कि जो बुराई करता है उस से नेकी की जाए। कोई एक गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा गाल भी फेर दिया जाए यह सही नहीं। या यह कहो कि सामान्य तौर पर यह शिक्षा पालन करने में नहीं आ सकती। अतः सादी कहता है -

نکوئی بابداں کردن چناں است

کہ بد کردن برائے نیک مرداں

इसलिए इस्लाम ने प्रतिशोध की सीमाओं में जो उच्च श्रेणी की शिक्षा दी है कोई अन्य धर्म उसका मुक़ाबला नहीं कर सकता और वह यह है -

وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ (अश्शूरा-41)

अर्थात् बदी का दण्ड उतनी ही बदी है और जो माफ़ करदे परन्तु ऐसे स्थान और मुक़ाम पर कि वह माफ करना सुधार का कारण हो। इस्लाम ने ग़लती को क्षमा करने की शिक्षा दी परन्तु यह नहीं उस से बुराई बढ़े।

अतः न्याय के बाद दूसरी श्रेणी इहसान (उपकार) की है अर्थात् बिना किसी बदले के व्यवहार किया जाए परन्तु इस व्यवहार में भी एक प्रकार की स्वार्थ परायणता होती है। किसी न किसी समय उस उपकार या नेकी को जता देता है। इस लिए इस से भी बढ़कर एक शिक्षा दी और वह اِيْتَآئِ ذِى الْقُرْبٰى की श्रेणी है। मां जो अपने बच्चे के साथ व्यवहार करती है वह उन से किसी बदले और इनाम-व

सम्मान की इच्छुक नहीं होती। वह उसके साथ जो नेकी करती है केवल स्वाभाविक प्रेम से करती है। यदि बादशाह उसे आदेश दे कि तू उसको दूध मत दे यदि यह तेरी लापरवाही से मर भी जाए तो तुझे कोई दण्ड नहीं दिया जाएगा अपितु इनाम दिया जाएगा। इस पर वह बादशाह का आदेश मानने को तैयार न होगी अपितु उस को गालियां देगी कि यह मेरी सन्तान का शत्रु है। इसका कारण यही है कि वह **व्यक्तिगत प्रेम** से कर रही है। उस का कोई मतलब मध्य में नहीं। यह उच्चश्रेणी की शिक्षा है जो इस्लाम प्रस्तुत करता है। और यह आयत अल्लाह के अधिकारों तथा बन्दे के अधिकारों दोनों पर छाई हुई है। अल्लाह के अधिकारों की दृष्टि से इस आयत का अर्थ यह है कि इन्साफ़ (न्याय) की दृष्टि से अल्लाह तआला का आज्ञापालन और इबादत करो जिसने तुम्हें पैदा किया है और तुम्हारा पोषण करता है और जो ख़ुदा के आज्ञापालन में इस मुक़ाम से उन्नति करे तो इहसान (उपकार) की पाबन्दी से आज्ञापालन करे क्योंकि वह मुहसिन (उपकारी) है और उसके उपकारों को कोई गिन नहीं सकता और चूंकि उपकारी के स्वभाव और आदतों को दृष्टिगत रखने से उस के उपकार ताज़ा रहते हैं। इसलिए उपकार का अर्थ आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह बताया है कि अल्लाह तआला की इबादत ऐसे तौर से करे जैसे देख रहा है या कम से कम यह कि अल्लाह तआला उसे देख रहा है। और इस स्थान तक मनुष्य में एक पर्दा रहता है परन्तु इसके पश्चात् एक **तीसरी श्रेणी** है

(अलनहल:91) اِیْتَآئِ ذِی الْقُرْبٰی

की अर्थात् उसे अल्लाह तआला से व्यक्तिगत प्रेम पैदा हो जाता

है। और बन्दों के अधिकारों की दृष्टि से मैं इसके मायने पहले वर्णन कर चुका हूं। और मैंने यह भी वर्णन किया है कि यह शिक्षा जो पवित्र क़ुर्आन ने दी है किसी और किताब ने नहीं दी और ऐसी पूर्ण है कि उसका कोई उदाहरण प्रस्तुत नहीं कर सकता। अर्थात्

(अश्शूरा - 41) جَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا

इसमें क्षमा के लिए यह शर्त रखी है कि उसमें सुधार हो। यहूदियों के धर्म ने यह किया था कि आंख के बदले आंख और दांत के बदले दांत (अंत तक)*। उनमें प्रतिशोध की शक्ति इतनी बढ़ गई थी और यहां तक कि यह आदत उन में इतनी दृढ़ हो गयी थी कि यदि बाप ने बदला नहीं लिया तो बेटे और उस के पोते तक के कर्त्तव्यों में यह बात होती थी कि वह बदला ले। इस कारण उनमें वैर रखने की आदत बढ़ गई थी और वे बहुत निर्दयी और बेरहम हो गए थे। ईसाइयों ने इस शिक्षा के मुकाबले पर यह शिक्षा दी कि एक गाल पर कोई थप्पड़ मारे तो दूसरा भी फेर दो। एक कोस बेगार ले जाए तो दो कोस चले जाओ इत्यादि। इस शिक्षा में जो दोष है वह प्रकट है कि इस का पालन ही नहीं हो सकता। और ईसाई सरकारों ने व्यावहारिक तौर पर यह सिद्ध कर दिया है कि यह शिक्षा दोषपूर्ण है। क्या किसी ईसाई की हिम्मत हो सकती है कि कोई पापी थप्पड़ मार कर दांत निकाल दे तो वह दूसरा गाल फेर दे कि अब दूसरा दांत भी निकाल दो। वह पापी तो और भी निडर हो जाएगा और इस से सार्वजनिक शान्ति में विघ्न पड़ जाएगा। फिर हम क्योंकर स्वीकार करें कि यह शिक्षा उत्तम है या ख़ुदा तआला की इच्छानुसार हो

* इस्तस्ना बाब 19 आयत 21

सकती है। यदि इस पर अमल हो तो किसी देश का भी प्रबंध न हो सके। एक देश एक शत्रु छीन ले तो दूसरा स्वयं सुपुर्द करना पड़े। एक अफ़सर गिरफ़्तार हो जाए तो दस और दिए जाएं। ये दोष हैं जो इन शिक्षाओं में हैं और यह सही नहीं। हां यह हो सकता है कि ये आदेश बतौर क़ानून युग से विशेष थे। जब वह युग बीत गया तो दूसरे लोगों की यथास्थिति वह शिक्षा न रही। यहूदियों का वह युग था कि वह चार सौ वर्ष तक दासता में रहे और दासता के जीवन के कारण उनमें हृदय की कठोरता बढ़ गई थी और वे हृदय में द्वेष रखने वाले हो गए। और यह नियम की बात है कि जिस बादशाह के युग में कोई होता है उसका आचरण भी उसी प्रकार के हो जाते हैं। सिक्खों के काल में अधिकतर लोग डाकू हो गए थे। अंग्रेज़ों के काल में सभ्यता और शिक्षा फैलती जाती है और हर व्यक्ति इस ओर प्रयास कर रहा है। अत: बनी इस्राईल ने फ़िरऔन की अधीनता की थी। इस कारण उन में अत्याचार बढ़ गया था। इसलिए तौरात के युग में न्याय की आवश्यकता प्राथमिक थी। क्योंकि वे लोग इस से अपिरिचत थे, क्रूरतापूर्ण आदत रखते थे और उन्होंने विश्वास कर लिया था कि दांत के बदले दांत का तोड़ना आवश्यक है और यह हमारा कर्त्तव्य है। इस कारण से अल्लाह तआला ने उन को सिखाया कि न्याय तक ही बात नहीं रहती अपितु उपकार भी आवश्यक है। इस कारण से मसीह के द्वारा उन्हें यह शिक्षा दी गई कि एक गाल पर थप्पड़ खा कर दूसरा गाल भी फेर दो। और जब इसी पर समस्त ज़ोर दिया गया तो अन्तत: अल्लाह तआला ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा इस शिक्षा को असल मर्म तक पहुंचा दिया।

और वह यही शिक्षा थी कि बुराई का बदला उतनी ही बुराई है। परन्तु जो व्यक्ति माफ़ कर दे और माफ करने से सुधार होता हो उसके लिए अल्लाह तआला के पास प्रतिफल है माफ़ करने की शिक्षा दी है परन्तु साथ प्रतिबंध लगाया कि सुधार हो। बे मौक़ा माफ करना हानि पहुंचाता है। अतः इस स्थान पर विचार करना चाहिए कि जब आशा सुधार की हो तो माफ़ ही करना चाहिए। जैसे दो सेवक हों एक बड़ा कुलीन, आज्ञाकारी और शुभ चिन्तक हो परन्तु संयोग से उस से कोई ग़लती हो जाए (तो) उस अवसर पर उसे माफ़ करना ही उचित है। यदि दण्ड दिया जाए तो ठीक नहीं परंतु एक बदमाश और बुरा है और प्रतिदिन नुकसान करता है और शरारतों से नहीं रुकता, यदि उसे छोड़ दिया जाए तो वह और भी धृष्ट हो जाएगा उसे दण्ड देना चाहिए। अतः इस प्रकार से अवसर और स्थान की पहचान से काम लो यह शिक्षा है जो इस्लाम ने दी है और जो पूर्ण है। तत्पश्चात् कोई अन्य नई शिक्षा या शरीअत नहीं आ सकती। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं और पवित्र क़ुर्आन ख़ातमुल कुतुब अब कोई और कलिम या कोई और नमाज़ नहीं हो सकती। जो कुछ आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया या करके दिखाया तथा जो कुछ पवित्र क़ुर्आन में है उसको छोड़ कर मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती। जो इसको छोड़ेगा वह नर्क में जाएगा। यह हमारा मत और आस्था है, परन्तु इसके साथ यह भी स्मरण रखना चाहिए कि इस उम्मत के लिए वार्तालापों एवं सम्बोधनों का दरवाज़ा खुला है। और यह दरवाज़ा मानो पवित्र क़ुर्आन की सच्चाई और आहंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई पर हर समय

ताज़ा गवाही है और इसके लिए ख़ुदा तआला ने सूरह फ़ातिहा ही में यह दुआ सिखाई है-

اِهْدِنَاالصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ صِراطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ

(अलफ़ातिहा 6-7)

اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ (अन्अम्ता अलैहिम) के मार्ग के लिए जो दुआ सिखाई तो उसमें अंबिया अलैहिमुस्सलाम की ख़ूबियों की प्राप्ति का संकेत है और यह स्पष्ट है कि नबियों को जो ख़ूबी दी गई वह ख़ुदा की मारिफ़त की ही ख़ूबी थी और उनको यह नेमत वार्तालापों एवं एवं सम्बोधनों से प्राप्त हुई थी इसी के तुम भी अभिलाषी हो। अतः इस नेमत के लिए यह विचार करो कि पवित्र क़ुर्आन इस दुआ का तो निर्देश करता है परन्तु उस हिदायत का प्रतिफल कुछ भी नहीं या इस उम्मत के किसी व्यक्ति को भी यह सम्मान नहीं मिल सकता तथा क़यामत तक यह दरवाज़ा बन्द हो गया है। बताओ इस से इस्लाम और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अपमान सिद्ध होगा या कोई ख़ूबी सिद्ध होगी। मैं सच-सच कहता हूं कि जो व्यक्ति यह विश्वास रखता है वह इस्लाम को बदनाम करता है और उसने शरीअत के सार को समझा ही नहीं। इस्लाम के उद्देश्यों में से तो यह बात थी कि मनुष्य केवल जीभ ही से वहदहू ला शरीक न कहे अपितु वास्तव में समझ ले और स्वर्ग एवं नर्क पर काल्पनिक ईमान न हो अपितु वास्तव में वह इसी जीवन में स्वर्गीय अवस्थाओं पर सूचना पा ले और उन गुनाहों (पापों) से जिन में वहशी मनुष्य ग्रस्त हैं मुक्ति पा ले। यह महान उद्देश्य मनुष्य का था और है। और यह ऐसा पवित्र एवं शुद्ध उद्देश्य है कि कोई दूसरी क़ौम अपने धर्म में

इसका उदाहरण प्रस्तुत नहीं कर सकती। और न उसका नमूना दिखा सकती है। कहने को तो प्रत्येक कह सकता है परन्तु वह कौन है जो दिखा सकता हो?

मैंने आर्यों से और ईसाइयों से पूछा है कि वह ख़ुदा जिसे तुम मानते हो उसका कोई प्रमाण प्रस्तुत करो वे केवल मौखिक डींगें मारने से बढ़कर कुछ भी नहीं दिखा सकते। वह सच्चा ख़ुदा जो पवित्र क़ुर्आन ने प्रस्तुत किया है उस से ये लोग अपरिचित हैं। उस पर सूचना पाने के लिए यही एक माध्यम वार्तालाप का था जिसके कारण इस्लाम दूसरे धर्मों से श्रेष्ठ था परन्तु खेद कि इन मुसलमानों ने मेरे विरोध के कारण इस से भी इन्कार कर दिया।

निस्सन्देह स्मरण रखो कि पापों से बचने की सामर्थ्य उस समय मिल सकती है जब मनुष्य पूर्ण रूप से अल्लाह तआला पर ईमान लाए। मानवीय जीवन का यही सब से बड़ा उद्देश्य है कि पाप के पंजे से मुक्ति प्राप्त कर ले। देखो एक सांप जो सुन्दर दिखाई देता है बच्चा उसको हाथ में पकड़ने की इच्छा कर सकता है और हाथ भी डाल सकता है परन्तु एक बुद्धिमान जो जानता है कि सांप काट लेगा औ मार देगा वह कभी साहस नहीं करेगा कि उसकी ओर लपके। अपितु यदि मालूम हो जाए कि किसी मकान में सांप है तो उसमें प्रवेश नहीं करेगा। ऐसा ही ज़हर को जिसे मारने वाली वस्तु समझता है तो उसे खाने पर दिलेर नहीं होगा। अतः इसी प्रकार जब तक गुनाह को खतरनाक विष विश्वास न कर ले उस से बच नहीं सकता। यह विश्वास मारिफ़त (अध्यात्म ज्ञान) के बिना पैदा नहीं हो सकता फिर वह क्या बात है कि मनुष्य गुनाहों पर इतना दिलेर हो जाता है।

इसके बावजूद कि वह ख़ुदा तआला पर ईमान लाता है। तथा गुनाह को गुनाह भी समझता है। इसका कारण इस के अतिरिक्त और कुछ नहीं कि वह आत्मज्ञान और प्रतिभा नहीं रखता जो गुनाह को जलाने वाली प्रकृति पैदा करती है। यदि यह बात पैदा नहीं होती तो फिर इक़रार करना पड़ेगा कि ख़ुदा की शरण इस्लाम अपने मूल उद्देश्य से रिक्त है परन्तु मैं कहता हूं कि ऐसा नहीं। यह उद्देश्य इस्लाम ही पूर्ण रूप से पूरा करता है और इस का एक ही माध्यम है ख़ुदा का वार्तालाप और सम्बोधन क्योंकि इसी से ख़ुदा तआला के अस्तित्व पर पूर्ण विश्वास पैदा होता है और इसी से ज्ञात होता है कि वास्तव में अल्लाह तआला गुनाह से विमुख है तथा दण्ड देता है। गुनाह एक विष है जो पहले छोटे से आरंभ होता है और फिर बड़ा हो जाता है और अन्ततः कुफ़्र तक पहुंचा देता है।

मैं अतिरिक्त असंबंधित वाक्य के तौर पर कहता हूं कि अपने-अपने स्थान पर प्रत्येक क़ौम को चिन्ता लगी हुई है कि हम गुनाह से पवित्र हो जाएं। उदाहरणतया आर्य लोगों ने तो यह बात रखी हुई है कि पाप के दण्ड के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय पवित्र होने का है ही नहीं। एक पाप के बदले कई लाख योनियां हैं जब तक मनुष्य उन योनियों को न भुगत ले वह पवित्र ही नहीं हो सकता। परन्तु इसमें बड़ी कठिनाइयां हैं। सब से बढ़कर यह कि समस्त सृष्टि पापी ही है तो इस से मुक्ति कब होगी? और इस से भी विचित्र बात यह है कि उनके यहां यह बात मान्य है कि मुक्ति प्राप्त भी एक समय के पश्चात् मुक्ति गृह से निकाल दिए जाएंगे। तो फिर इस मुक्ति से लाभ ही क्या हुआ? जब यह प्रश्न किया जाए कि मुक्ति प्राप्त करने के बाद क्यों

निकालते हो तो कुछ कहते हैं कि निकालने के लिए एक पाप शेष रख लिया जाता है। अब विचार करके बताओ कि क्या यह शक्तिमान ख़ुदा का कार्य हो सकता है? और फिर जबकि प्रत्येक नफ़्स अपने नफ़्स का स्वयं स्रष्टा है ख़ुदा तआला उसका स्रष्टा ही नहीं (ख़ुदा की शरण) तो उसे आवश्यकता ही क्या है कि वह उसका अधीन रहे।

दूसरा पहलू ईसाइयों का है उन्होंने पाप से पवित्र होने का एक पहलू सोचा है और वह यह है कि हज़रत ईसा को ख़ुदा और ख़ुदा का बेटा मान लो और फिर विश्वास कर लो कि उसने हमारे गुनाह (पाप) उठा लिए और वह सलीब के द्वारा लानती हुआ। (हम इस बात से ख़ुदा की शरण चाहते हैं) अब विचार करो कि मुक्ति-प्राप्ति का इस तरीक़े से क्या सम्बद्ध? पापों से बचाने के लिए एक और बड़ा पाप बनाया कि इन्सान को ख़ुदा बनाया गया। क्या इस से बढ़कर कोई अन्य पाप हो सकता है? फ़िर ख़ुदा बना कर उसे साथ ही लानती ठहरा दिया। इस से बढ़कर धृष्टता और अल्लाह तआला का अनादर और क्या होगा। एक खाता-पीता आवश्यकताओं का मुहताज ख़ुदा बना लिया गया। हालांकि तौरात में लिखा था कि दूसरा ख़ुदा न हो न आकाश पर न पृथ्वी पर। फ़िर दरवाज़ों और चौखटों पर यह शिक्षा लिखी गई थी उसे छोड़कर यह नया ख़ुदा बनाया गया जिस का तौरात में कुछ भी पता नहीं मिलता।

मैंने विद्वान यहूदी से पूछा है कि क्या तुम्हारे यहां ऐसे ख़ुदा ख़ुदा का पता है जो मरयम के पेट से निकले और वह यहूदियों के हाथों से मार खाता फिरे। इस पर यहूदी विद्वान ने मुझे यही उत्तर दिया कि यह केवल झूठ है। तौरात से ऐसे किसी ख़ुदा का पता नहीं

मिलता। हमारा वह ख़ुदा है जो पवित्र क़ुर्आन का ख़ुदा है अर्थात जिस प्रकार पवित्र क़ुर्आन ने ख़ुदा तआला के एकेश्वरवाद की सूचना दी है उसी प्रकार से हम तौरात की दृष्टि से ख़ुदा तआला को अकेला और भागीदार रहित मानते हैं तथा किसी मनुष्य को ख़ुदा नहीं मान सकते। और यह तो मोटी बात है कि यदि यहूदियों के यहां किसी ऐसे ख़ुदा की सूचना दी गई होती जो स्त्री के पेट से पैदा होने वाला था तो वह हज़रत मसीह का इतना घोर विरोध ही क्यों करते? यहां तक कि उन्होंने उसको सलीब पर चढ़ा दिया और उन पर कुफ़्र कहने का आरोप लगाते थे। इस से स्पष्ट तौर पर ज्ञात होता है कि वे इस बात को स्वीकार करने के लिए बिल्कुल तैयार न थे।

अतः ईसाइयों ने पाप को दूर करने का जो उपचार बताया है वह ऐसा उपचार है कि वह स्वयं पाप को पैदा करता है और उसका पाप से मुक्ति पाने के साथ कोई सम्बन्ध ही नहीं है। उन्होंने पाप को दूर करने का उपचार पाप बताया है जो किसी स्थिति और रूप में उचित नहीं। ये लोग अपने मूर्ख दोस्त हैं और इनका उदाहरण उस बन्दर जैसा है जिस ने अपने मालिक का ख़ून कर दिया था। अपने बचाव के लिए तथा पापों से मुक्ति पाने के लिए एक ऐसा पाप प्रस्तावित किया जो किसी प्रकार से क्षमा न किया जाए अर्थात् शिर्क किया और असहाय मनुष्य को ख़ुदा बना लिया। मुसलमानों के लिए कितना प्रसन्नता का स्थान है कि उनका ख़ुदा ऐसा ख़ुदा नहीं जिस पर कोई आरोप या आक्रमण हो सके। वे उसकी शक्तियों और क़ुदरतों पर ईमान रखते हैं और उसकी विशेषताओं पर विश्वास लाते हैं। परन्तु जिन्होंने मनुष्य को ख़ुदा बनाया या जिन्होंने उसकी क़ुदरतों

से इन्कार कर दिया उनके लिए ख़ुदा न होना और होना बराबर है। जैसे उदाहरण के तौर पर आर्यों का धर्म है कि अपने अस्तित्व का कण-कण स्वयं ही ख़ुदा है और उसने कुछ भी पैदा नहीं किया। अब बताओ कि जब कणों के अस्तित्व का स्रष्टा ख़ुदा नहीं तो उसकी स्थापना के लिए ख़ुदा की आवश्यकता क्या है जबकि शक्तियां स्वयं मौजूद हैं और उनमें मिलने तथा अलग होने की शक्तियां भी मौजूद हैं तो फिर इन्साफ़ से बताओ कि उनके लिए ख़ुदा के अस्तित्व की क्या आवश्यकता है। मैं समझता हूं कि इस आस्था को रखने वाले आर्यों और नास्तिकों में 19 और 20 का अन्तर है। अब केवल इस्लाम ही एक ऐसा धर्म है जो पूर्ण एवं जीवित धर्म है। और अब समय आ गया है कि पुनः इस्लाम की शान और दबदबा प्रकट हो। और मैं इसी **उद्देश्य को लेकर आया हूं।**

मुसलमानों को चाहिए कि इस समय जो प्रकाश और बरकतें आकाश से उतर रही हैं वे उनकी क़द्र करें और अल्लाह तआला का धन्यवाद करें कि समय पर उनकी सहायता हुई और ख़ुदा तआला ने अपने वादे के अनुसार इस संकट के समय उनकी सहायता की। यदि वे ख़ुदा तआला की इस नेमत की क़द्र नहीं करेंगे तो ख़ुदा तआला उन की कुछ परवाह न करेगा, वह अपना कार्य करके रहेगा। परन्तु इन पर अफ़सोस होगा।

मैं बड़े ज़ोर से और पूर्ण विश्वास तथा विवेक से कहता हूं कि अल्लाह तआला ने इरादा किया है कि दूसरे धर्मों को मिटा दे और इस्लाम को विजय तथा शक्ति दे। अब कोई हाथ और शक्ति नहीं जो ख़ुदा तआला के इस इरादे का मुक़ाबला करे। वह فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ

है (अर्थात जो चाहे उसे करने वाला - अनुवादक) हे मुसलमानो! स्मरण रखो कि अल्लाह तआला ने मेरे द्वारा तुम्हें यह सूचना दी है और मैंने अपना सन्देश पहुंचा दिया है। अब उसे सुनना या न सुनना तम्हारे अधिकार में है। यह सच्ची बात है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु पा चुके हैं और **मैं ख़ुदा तआला की क़सम खा कर कहता हूं कि जो मौऊद आने वाला था वह मैं ही हूं और यह भी पक्की बात है कि इस्लाम की ज़िन्दगी ईसा के मरने में है।**

यदि इस मामले पर विचार करोगे तो तुम्हें ज्ञात हो जाएगा कि यही मामला है जो ईसाई धर्म का अन्त कर देने वाला है। यह ईसाई धर्म का बहुत बड़ा स्तम्भ है और इसी पर इस धर्म की इमारत स्थापित की गई है इसे गिरने दो। यह मामला बड़ी सफ़ाई से तय हो जाता यदि मेरे विरोधी ख़ुदा के भय और संयम से काम लेते। परन्तु एक का नाम लो जो दरिन्दगी त्याग कर मेरे पास आया हो और उसने अपनी सांत्वना चाही हो। उनका तो यह हाल है कि मेरा नाम लेते ही उनके मुख से झाग गिरना प्रारंभ हो जाता है और वे गालियां देने लग जाते हैं। भला इस प्रकार से भी कोई व्यक्ति सच को पा सकता है?

मैं तो पवित्र क़ुर्आन के स्पष्ट आदेशों को प्रस्तुत करता हूं और हदीस प्रस्तुत करता हूं, सहाबा [रज़ि.] का इज्मा (सर्व सम्मति) प्रस्तुत करता हूं परन्तु वे हैं कि इन बातों को सुनते नहीं और काफ़िर-काफ़िर, दज्जाल-दज्जाल कह कर शोर मचाते हैं। मैं स्पष्ट तौर पर कहता हूं कि तुम पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध करो कि मसीह जीवित आकाश पर चला गया हो। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के देखने के विरुद्ध कोई बात प्रस्तुत करो और या अबू बक्र [रज़ि] के समय आंहज़रत

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मृत्यु पर जो पहला इज्मा हुआ उसके विरुद्ध दिखाओ तो उत्तर नहीं मिलता। फिर कुछ लोग शोर मचाते हैं कि यदि आने वाला वही मसीह इब्ने मरयम इस्राईली नबीं नहीं था तो आने वाले का यह नाम क्यों रखा गया? मैं कहता हूं कि यह आरोप कैसा मूर्खतापूर्ण आरोप है। आश्चर्य की बात है कि ऐतराज़ करने वाले अपने लड़कों का नाम तो मूसा, ईसा, दाऊद, अहमद, इब्राहीम, इस्माईल रख लेने के अधिकारी हों और यदि अल्लाह तआला किसी का नाम ईसा रख दे तो उस पर ऐतराज़। इस स्थान पर विचारणीय बात तो यह थी कि क्या आने वाला अपने साथ निशान रखता है या नहीं? यदि वे उन निशानों को पाते तो इन्कार के लिए साहस न करते। परन्तु उन्होंने निशानों एवं सहायताओं की तो परवाह न की और दावा सुनते ही कह दिया कि तू काफ़िर है।

यह सिद्धान्त की बात है कि अंबिया अलैहिमिस्सलाम और ख़ुदा तआला के मामूरों की पहचान का माध्यम उनके चमत्कार और निशान होते हैं। जैसा कि सरकार की ओर से कोई व्यक्ति यदि हाकिम नियुक्त किया जाए तो उसको निशान दिया जाता है। इसी प्रकार से ख़ुदा तआला के मामूरों की पहचान के लिए भी निशान होते हैं और मैं दावे से कहता हूं कि ख़ुदा तआला ने मेरे समर्थन में न एक, न दो, न दो सौ अपितु लाखों निशान प्रकट किए और ये निशान ऐसे नहीं हैं कि कोई उन्हें जानता नहीं अपितु उनके लाखों गवाह हैं। और मैं कह सकता हूं कि इस जल्से में भी उनके सैकड़ों गवाह मौजूद होंगे। मेरे लिए आकाश से निशान प्रकट हुए हैं, पृथ्वी से भी प्रकट हुए।

वे निशान जो मेरे दावे के साथ विशिष्ट थे तथा जिनकी समय

से पूर्व और नबियों तथा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा सूचना दी गई थी वे भी पूरे हो गए। उदाहरण के तौर पर उन में से एक सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण का ही निशान है जो तुम सब ने देखा। यह सही हदीस में ख़बर दी गई थी कि महदी और मसीह के समय में रमज़ान के महीने में सूर्य एवं चन्द्र-ग्रहण होगा। अब बताओ कि क्या यह निशान पूरा हुआ है या नहीं? कोई है जो कहे कि उसने यह निशान नहीं देखा? इसी प्रकार यह भी ख़बर दी गई थी कि उस युग में ताऊन फैलेगी और इतनी तीव्र होगी कि दस में से सात मर जाएंगे। अब बताओ कि क्या ताऊन का निशान प्रकट हुआ या नहीं? फिर यह भी लिखा था कि उस समय एक नई सवारी प्रकट होगी जिस से ऊंट बेकार हो जाएंगे। क्या रेल जारी होने से यह निशान पूरा नहीं हुआ? मैं कहां तक गणना करूं। यह निशानों की बहुत बड़ी श्रृंखला है। अब विचार करो कि मैं तो दावा करने वाला दज्जाल और झूठा ठहराया गया फिर यह क्या प्रकोप हुआ कि मुझ झूठे के लिए ही ये समस्त निशान पूरे हो गए? फिर यदि कोई आने वाला और है तो उसको क्या मिलेगा? कुछ तो इन्साफ़ करो और ख़ुदा तआला से डरो क्या ख़ुदा तआला किसी झूठे की भी ऐसी सहायता किया करता है? विचित्र बात है कि जो मेरे मुक़ाबले पर आया वह असफल और विफल रहा और विरोधियों ने मुझे जिस संकट और विपदा में डाला मैं उस से सही सलामत और सफल निकला। फिर कोई क़सम खा कर बता दे कि झूठों के साथ यही मामला हुआ करता है?

मुझे अफ़सोस से कहना पड़ता है कि इन विरोधी मत रखने वाले उलेमा को क्या हो गया, वे पवित्र क़ुर्आन और हदीसों को ध्यानपूर्वक

क्यों नहीं पढ़ते। क्या उन्हें मालूम नहीं कि जितने बड़े लोग उम्मत के गुज़रे हैं वे सब के सब मसीह मौऊद के आगमन को चौदहवीं सदी में बताते रहे हैं, और समस्त कश्फ़ वालों के कश्फ़ यहां आकर ठहर जाते हैं। हुजजुल किरामः में साफ़ लिखा है कि चौदहवीं सदी से आगे नहीं जाएगा। यही लोग मिम्बरों पर चढ़-चढ़ कर वर्णन किया करते थे कि तेरहवीं सदी से तो जानवरों ने भी शरण मांगी है और चौदहवीं सदी मुबारक होगी परन्तु यह क्या हुआ कि वह चौदहवीं सदी जिस पर यह एक मौऊद (प्रतिज्ञात) इमाम आने वाला था उसमें सच्चे के स्थान पर झूठा आ गया और उसके समर्थन में हज़ारों, लाखों निशान भी प्रकट हो गए और ख़ुदा तआला ने हर मैदान और मुक़ाबले में सहायता भी उसी की की। इन बातों का थोड़ा सोच कर उत्तर दो। यों ही मुंह से एक बात निकाल देना आसान है परन्तु ख़ुदा तआला के भय से बात निकालना कठिन है।

इसके अतिरिक्त यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि ख़ुदा तआला एक मुफ़्तरी और झूठे इन्सान को इतनी लम्बी छूट नहीं देता कि वह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी बढ़ जाए। मेरी आयु 67 वर्ष की है और मेरे अवतरण का समय 23 वर्ष से अधिक हो गया है यदि मैं ऐसा ही मुफ़्तरी और कज़्ज़ाब (महा झूठा) था तो अल्लाह तआला इस मामले को इतना लम्बा न होने देता। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि तुम्हारे आने से क्या लाभ हुआ? स्मरण रखो मेरे आगमन के दो उद्देश्य हैं। एक यह कि जो विजय इस समय इस्लाम पर अन्य धर्मों की हुई है जैसे वे इस्लाम को खाते जाते हैं और इस्लाम अत्यन्त कमज़ोर और अनाथ बच्चे के समान हो गया

है। अत: इस समय ख़ुदा तआला ने मुझे भेजा है ताकि मैं इस्लाम को अपनी मूल आस्थाओं को छोड़ चुके धर्मों के आक्रमणों से बचाऊं और इस्लाम के ज़ोरदार तर्कों तथा सच्चाइयों के प्रमाण प्रस्तुत करूं। और वे प्रमाण ज्ञान संबंधी तर्कों के प्रकाश और आकाशीय बरकतें हैं जो हमेशा से इस्लामी समर्थन में प्रकट होते रहे हैं। इस समय यदि तुम पादरियों की रिपोर्टें पढ़ो तो ज्ञात हो जाएगा कि वे इस्लाम के विरोध के लिए क्या सामान कर रहे हैं। और उनका एक एक अखबार कितनी संख्या में प्रकाशित होता है। ऐसी हालत में आवश्यक था कि इस्लाम का बोलबाला किया जाता। अत: इस उद्देश्य के लिए ख़ुदा तआला ने मुझे भेजा है। और मैं निश्चित तौर पर कहता हूं कि इस्लाम की विजय होकर रहेगी और इसके लक्षण प्रकट हो चुके हैं। हां यह सच्ची बात है कि इस विजय के लिए किसी तलवार और बन्दूक़ की आवश्यकता नहीं और न ख़ुदा तआला ने मुझे हथियारों के साथ भेजा है। जो व्यक्ति इस समय यह सोचे वह इस्लाम का मूर्ख दोस्त होगा। धर्म का उद्देश्य दिलों पर विजय प्राप्त करना होता है और यह उद्देश्य तलवार से प्राप्त नहीं होता। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो तलवार उठाई मैं कई बार प्रकट कर चुका हूं कि वह तलवार केवल आत्मरक्षा और बचाव के तौर पर थी और वह भी उस समय जबकि विरोधियों और इन्कारियों के अत्याचार हद से गुज़र गए थे और असहाय मुसलमानों के ख़ून से पृथ्वी लाल हो चुकी।

अत: मेरे आगमन का उद्देश्य तो यह है कि इस्लाम की विजय दूसरे धर्मों पर हो।

दूसरा कार्य यह है कि जो लोग कहते हैं कि हम नमाज़ पढ़ते हैं

और यह करते हैं और वह करते हैं यह केवल जीभों पर हिसाब है। इसके लिए आवश्यकता है कि वह हालत मनुष्य के अन्दर पैदा हो जाए जो इस्लाम का सार और मूल है। मैं तो यह जानता हूं कि कोई व्यक्ति मोमिन और मुसलमान नहीं बन सकता जब तक अबू बक्र, उमर, उस्मान, अली रिज़्वानुल्लाहु अलैहिम अज्मईन के समान रंग पैदा न हो। वे दुनिया से प्रेम नहीं करते थे अपितु उन्होंने अपने जीवन ख़ुदा तआला के मार्ग में समर्पित किए हुए थे। अब जो कुछ है वह दुनिया के लिए है और दुनिया के लिए इतनी तन्मयता हो रही है कि ख़ुदा तआला के लिए कोई स्थान खाली नहीं रहने दिया। व्यापार है तो दुनिया के लिए, इमारत है तो दुनिया के लिए अपितु नमाज़ और रोज़ा है तो वह भी दुनिया के लिए। दुनियादारों के सानिध्य के लिए तो सब कुछ किया जाता है परन्तु धर्म का सम्मान कुछ भी नहीं। अब हर व्यक्ति समझ सकता है कि क्या इस्लाम के इक़रार और स्वीकारिता का इतना ही आशय था जो समझ लिया गया है या वह बुलन्द उद्देश्य है? मैं तो यह जानता हूं कि मोमिन पवित्र किया जाता है और उसमें फ़रिश्तों का रंग हो जाता है। जैसे-जैसे अल्लाह तआला का सानिध्य बढ़ता जाता है वह ख़ुदा तआला का कलाम सुनता और उस से तसल्ली पाता है। अब तुम में से प्रत्येक अपने-अपने दिल में सोच ले कि क्या यह पद उसे प्राप्त है? मैं सच-सच कहता हूं कि तुम केवल छाल और छिलके पर सन्तुष्ट हो गए हो हालांकि यह कुछ चीज़ नहीं है ख़ुदा तआला गूदा चाहता है। तो जैसे मेरा यह कार्य है कि उन आक्रमणों को रोका जाए जो बाह्य तौर पर इस्लाम पर होते हैं, वैसे ही मुसलमानों में इस्लाम की वास्तविकता और रूह पैदा की

जाए। मैं चाहता हूं कि मुसलमानों के दिलों में ख़ुदा तआला के स्थान पर जो मूर्तियों को श्रेष्ठता दी गई है उसकी आशाओं और उम्मीदों को रखा गया है, मुकद्दमें और सुलह जो कुछ है वह दुनिया के लिए है उस मूर्ति को टुकड़े-टुकड़े किया जाए और अल्लाह तआला की श्रेष्ठता और प्रतिष्ठा उनके दिलों में क़ायम हो और ईमान रूपी वृक्ष ताज़ा से ताज़ा फल दे। इस समय वृक्ष का रूप है परन्तु वास्तविक वृक्ष नहीं। क्योंकि वास्तविक वृक्ष के लिए तो फ़रमाया -

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ ۙ تُؤْتِيْٓ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍۢ بِاِذْنِ رَبِّهَا

(इब्राहीम-25,26)

अर्थात् क्या तूने नहीं देखा कि क्योंकर वर्णन किया अल्लाह तआला ने उदाहरण अर्थात् कामिल धर्म का उदाहरण कि वह पवित्र बात पवित्र वृक्ष के समान है जिसकी जड़ स्थापित हो और जिसकी शाखाएं आकाश में हों और वह हर समय अपना फल अपने परवरदिगार के आदेश से देता है, اصلها ثابت से अभिप्राय यह है कि उसके सिद्धान्त प्रमाणित निश्चित हों और पूर्ण विश्वास के स्तर तक पहुंचे हुए हों और वह हर समय अपना फल देता रहे किसी समय खुश्क वृक्ष के समान न हो। परन्तु बताओ कि क्या अब यह हालत है? बहुत से लोग कह तो देते हैं कि आवश्यकता ही क्या है? इस बीमार की कैसी मूर्खता है जो यह कहे कि वैद्य से निस्पृह है और उसकी आवश्यकता नहीं समझता तो इस का परिणाम उसकी तबाही के अतिरिक्त और क्या होगा?

इस समय मुसलमान اَسْلَمْنَا (अस्लम्ना) में तो निस्सन्देह

दाख़िल है परन्तु اٰمَنَّـا के अन्तर्गत नहीं। और यह उस समय होता है कि जब एक प्रकाश साथ हो।

अत: ये वे बातें हैं जिन के लिए मैं भेजा गया हूं इसलिए मेरे मामले में झुठलाने के लिए जल्दी न करो अपितु ख़ुदा तआला से डरो और तौब: करो। क्योंकि तौब: करने वाले की बुद्धि तेज़ होती है। **ताऊन** का निशान बहुत ख़तरनाक निशान है और ख़ुदा तआला ने इस के बारे में मुझ पर जो कलाम उतारा है वह यह है -

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ (अर्रअद-12)

यह ख़ुदा तआला का कलाम है और उस पर लानत है जो ख़ुदा तआला पर झूठ बांधे। ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि मेरे इरादे में उस समय परिवर्तन होगा जब हृदयों में परिवर्तन होगा। इसलिए ख़ुदा तआला से डरो और उसके प्रकोप से भय करो। कोई किसी का ज़िम्मेदार नहीं हो सकता। किसी पर साधारण मुक़द्दमा हो तो अधिकतर लोग वफ़ा नहीं कर सकते फिर आख़िरत में क्या भरोसा रखते हो जिसके संबंध में फ़रमाया - يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ (अबस-35) विरोधियों का तो यह कर्त्तव्य था कि वे सुधारणा से काम लेते और لَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ (बनी इस्राईल-37) पर अमल करते परन्तु उन्होंने जल्दबाज़ी से काम लिया। स्मरण रखो पहली क़ौमें इसी प्रकार तबाह हुईं। बुद्धिमान वह है जो विरोध करके भी जब उसे ज्ञात हो कि वह ग़लती पर था उसे त्याग दे। परन्तु यह बात तब प्राप्त होती है कि जब ख़ुदा का भय हो। और असल मर्दों का कार्य यही है कि वह अपनी ग़लती का इक़रार करें। वही पहलवान है और उसी को ख़ुदा तआला पसन्द करता है।

इन समस्त बातों के अतिरिक्त मैं अब **अनुमान** के संबंध में कुछ कहना चाहता हूं कि यद्यपि क़ुर्आन और हदीस के स्पष्ट आदेश मेरे साथ हैं सहाबा[रज़ि.] का इज्मा भी मेरा समर्थन करता है। ख़ुदा के निशान और सहायताएं मेरी सहायक हैं। **समय की आवश्यकता मेरा सच्चा होना प्रकट करती है** परन्तु **अनुमान** के माध्यम से भी प्रमाण पूरा हो सकता है। इसलिए देखना चाहिए कि अनुमान क्या कहता है? मनुष्य कभी किसी ऐसी वस्तु को मानने के लिए तैयार नहीं हो सकता जो अपना उदाहरण न रखती हो। उदाहरणतया यदि एक व्यक्ति आकर कहे कि तुम्हारे बच्चे को हवा उड़ा कर आकाश पर ले गई है या बच्चा कुत्ता बन कर भाग गया है तो क्या तुम उसकी बात को अकारण उचित और बिना छान-बीन मान लोगे? कभी नहीं। इसलिए पवित्र क़ुर्आन ने फ़रमाया है -

فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ (अन्नहल-44)

अब मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु के मामले पर और उन के आकाश पर उड़ जाने के बारे में विचार करो। उन तर्कों से दृष्टि हटाकर जो उनकी मृत्यु के बारे में हैं यह दृढ़ बात है कि काफ़िरों ने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से आकाश पर चढ़ जाने का चमत्कार मांगा। अब आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो हर तरह कामिल और सर्वश्रेष्ठ थे उनको चाहिए था कि वह आकाश पर चढ़ जाते परन्तु उन्होंने अल्लाह तआला की वह्यी से उत्तर दिया -

قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا (बनी इस्राईल-94)

इसका अर्थ यह है कि कह दो अल्लाह तआला इस बात से पवित्र है कि वह वादे के विरुद्ध करे जबकि उसने मनुष्य के लिए

आकाश पर शरीर सहित जाना अवैध कर दिया है परन्तु मैं जाऊं तो झूठा ठहरूंगा। अब यदि तुम्हारी यह आस्था सही है कि मसीह आकाश पर चला गया है और कोई पादरी मुक़ाबले पर यह आयत प्रस्तुत करे आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ऐतराज़ करे तो तुम इस का क्या उत्तर दे सकते हो? तो ऐसी बातों के मानने से क्या लाभ जिन का कोई असल पवित्र क़ुर्आन में मौजूद नहीं। इस प्रकार से तुम इस्लाम को तथा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बदनाम करने वाले ठहरोगे। फिर पहली किताबों में भी तो कोई उदाहरण मौजूद नहीं और उन किताबों से विवेचन करना अवैध नहीं है। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है -

شَهِدَ شَاهِدٌ مِّنۡ بَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ (अलअहक़ाफ - 11)

और फिर फ़रमाया -

كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيۡدًا بَيۡنِىۡ وَبَيۡنَكُمۡ وَمَنۡ عِنۡدَهٗ عِلۡمُ الۡكِتٰبِ

(अर्रअद - 44)

और ऐसा ही फ़रमाया -

يَعۡرِفُوۡنَهٗ كَمَا يَعۡرِفُوۡنَ اَبۡنَآءَهُمۡ (अलबक़रह-147)

जब आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत के सिद्ध के लिए उनको प्रस्तुत करता है तो हमारा उन से विवेचन करना क्यों अवैध हो गया?

अब उन्हीं किताबों में एक मलाकी नबी की किताब है जो बाइबल में मौजूद है। इसमें मसीह से पूर्व एलिया के दोबारा आने का वादा किया गया। अंततः जब मसीह इब्ने मरयम आए तो हज़रत

मसीह से इल्यास के दोबारा आने का प्रश्न मलाकी नबी की इस भविष्यवाणी के अनुसार किया गया परन्तु हज़रत मसीह ने यह फ़ैसला किया कि वह आने वाला यूहन्ना के रंग में आ चुका।

अब यह फ़ैसला हज़रत ईसा ही की अदालत से हो चुका है कि दोबारा आने वाले से क्या अभिप्राय होता है। वहां यह्या का नाम इल्यास का मसील (समरूप) नहीं रखा अपितु उन्हें ही एलिया ठहराया गया। अब यह अनुमान भी मेरे साथ है। मैं तो उदाहरण प्रस्तुत करता हूं परन्तु मेरे इन्कारी कोई उदाहरण प्रस्तुत नहीं करते। कुछ लोग जो इस स्थान पर असमर्थ हो जाते हैं तो कह देते हैं कि ये किताबें अक्षरांतरित और परिवर्तित हैं परन्तु खेद है ये लोग इतना नहीं समझते कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सहाबा [रज़ि.] इस से प्रमाण लेते रहे और अधिकतर बुज़ुर्गों ने अर्थों में अक्षरान्तरण अभिप्राय लिया है। बुख़ारी ने भी यही कहा है। इसके अतिरिक्त यहूदियों और ईसाइयों की जानी दुश्मनी है। किताबें अलग-अलग है वे अब तक मानते हैं कि इल्यास दोबारा आएगा। यदि यह प्रश्न न होता तो हज़रत मसीह को वह स्वीकार न कर लेते? एक यहूदी विद्वान की किताब मेरे पास है। वह बड़े ज़ोर से लिखता है और अपील करता है कि यदि मुझ से यह प्रश्न होगा तो मैं मलाकी नबी की किताब सामने रख दूंगा कि उसमें इल्यास के पुनः आने का वादा किया गया था।

अब विचार करो इन आपत्तियों के बावजूद लाखों यहूदी नारकी हुए और सुअर-बन्दर बने तो क्या मेरे मुक़ाबले में आपत्ति सही होगी कि वहां मसीह इब्ने मरयम का वर्णन है। यहूदी तो असमर्थ हो सकते थे उनमें उदाहरण न था। परन्तु अब तो कोई आपत्ति शेष नहीं। मसीह

की मृत्यु पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध है और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का देखना उसका सत्यापन करता है और फिर पवित्र क़ुर्आन और हदीस में مِنْكُمْ (मिन्कुम) आया है। फिर ख़ुदा तआला ने मुझे ख़ाली हाथ नहीं भेजा। हज़ारों-लाखों निशान मेरे सत्यापन में प्रकट हुए और अब भी यदि कोई चालीस दिन मेरे पास रहे तो वह निशान देख लेगा। लेखराम का निशान महान निशान है। मूर्ख कहते हैं कि मैंने क़त्ल करा दिया। यदि यह ऐतराज़ सही है तो फिर ऐसे निशानों से अमन ही उठ जाएगा। कल को कह दिया जाएगा कि खुसरो परवेज़ को मआज़ल्लाह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि ने क़त्ल करा दिया होगा। ऐसे ऐतराज़ सच देखने वालों और सच पहचानने वाले लोगों का कार्य नहीं है।

मैं अन्त में पुनः कहता हूं कि मेरे निशान कम नहीं। एक लाख से अधिक लोग मेरे निशानों पर गवाह हैं और जीवित हैं। मेरे इन्कार में जल्दी न करो अन्यथा मृत्योपरांत क्या उत्तर दोगे? **निस्सन्देह स्मरण रखो कि ख़ुदा तआला सर पर है और वह सच्चे को सच्चा ठहराता और झूठे को झूठा।**

★ ★ ★